ज्ञानामृत

वर्ष 49, अंक 12, जून 2014 (मासिक),
मूल्य 8.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 100 रुपये

मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती जिन्होंने 24 जून, 1965 को सम्पूर्णता प्राप्त की

1.धनकुटा- ज्ञान-चर्चा के बाद नेपाल के उप-प्रधानमन्त्री भाता प्रकाशमान सिंह, सभासद मनोहर नारायण श्रेष्ठ, ब्र.कु.रोहित भाई तथा ब्र.कु. चन्द्रकला बहन समूह चित्र में **2. दिल्ली (ओ.आर.सी.)-** 'गीता के भगवान द्वारा स्वर्गिम विश्व की पुन: स्थापना' विषयक अखिल भारतीय सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए कुरुक्षेत्र विश्व विद्यालय के संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ.एस.एम.मिश्रा, ब्र.कु.डॉ.बसवराज भाई, महामण्डलेश्वर स्वामी हरिओम गिरि, न्यायाधीश भाता वी.ईश्वरैय्या, ब्र.कु.बृजमोहन भाई, महामण्डलेश्वर डॉ.शाश्वतानन्द तथा अन्य। **3.झालावाड़-** राजस्थान की मुख्यमंत्री बहन वसुधरा राजे को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.मौना बहन। **4.दिल्ली (लोधी रोड)-** 'वाह जिंदगी वाह' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.पीयूष, ब्र.कु.शिवानी बहन, ब्र.कु.पुष्पा बहन, न्यायाधीश भाता वी.ईश्वरैय्या तथा ब्र.कु.गिरिजा बहन। **5.काठमाण्डू (नेपाल)-** 'परमात्म शक्ति द्वारा महापरिवर्तन का समय' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए नेपाल के महामहिम उपराष्ट्रपति भाता परमानन्द झा, ब्र.कु.मुन्नी बहन, ब्र.कु.राज बहन, निर्वाचन आयुक्त डॉ.रामभक्त ठाकुर, ब्र.कु.किरण बहन तथा ब्र.कु.रामसिंह भाई। **6.भोपाल-** मध्यप्रदेश के राज्यपाल महामहिम भाता रामनरेश यादव को ब्रह्माकुमारीज़ मुख्यालय पधारने का निमन्त्रण देते हुए ब्र.कु.अवधेश बहन तथा अन्य बहनें। **7.मुंबई (बोरिवली)-** 'आओ, प्रभु शरण आओ' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए फिल्म निर्देशक भाता सुभाष घई, संगीत निर्देशक भाता समीर सेन, पद्म भूषण भाता लिन्डर पाइस, ब्र.कु.बृजमोहन भाई, ब्र.कु.डॉ.निर्मला बहन, ब्र.कु.सन्तोष बहन, ब्र.कु.दिव्या बहन तथा अन्य। **8.भुवनेश्वर-** 'परमात्म शक्तियों द्वारा महापरिवर्तन का समय' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए सांसद भाता प्रसन्न पटसनी, ब्र.कु.लीना बहन, ब्र.कु. तपस्विनी, ब्र.कु.सुशांत भाई तथा अन्य।

संजय की कलम से ..

पहचान आदरणीया माँ सरस्वती की

हमारे इस संगमयुग के नये जीवन में आदरणीय, माननीय एवं सराहनीय भी एक-से-ऊपर-एक और कई हैं। हमारे यहाँ योगी भी हैं, महायोगी भी, तपस्वी भी हैं, महातपस्वी भी। ज्ञान-निष्ठ भी हैं, महाज्ञानी भी हैं। एक से बढ़कर एक उज्ज्वल चरित्र वाली गुण मूर्तियाँ हैं। कोई निर्मल स्वभाव के अतिरिक्त शान्तमूर्त हैं तो कोई सन्तुष्टमणि। कोई शीतला हैं तो कोई दुर्गा। कोई ज्ञान की गजगोर करने वाली हैं तो कोई शंखध्वनि। कोई अन्नपूर्णा हैं, मातृवत् पालना करने वाली हैं तो कोई सती-साध्वी, मन-चित्त से गौरी माँ। अत: उन सभी का तदनुसार आदर भी होना चाहिए। जन्म-जन्मान्तर जिनकी भक्ति-पूजा की, अब उनके प्रति श्रद्धा और भावना तो होनी ही चाहिए। उनमें से किसी का अपमान करना तो अपने सिर पर मानवी कोप और प्राकृतिक प्रकोप आमन्त्रित करने-जैसा है।

माँ सरस्वती का स्थान और मान

इनमें भी प्रजापिता ब्रह्मा के पश्चात् जगदम्बा सरस्वती का स्थान तो अपनी रीति से सर्व महान है। यज्ञ की स्थापना में उनकी शिरोमणि पवित्रता, घोर तपस्या, अटूट निश्चय इत्यादि की तो जितनी महिमा की जाये उतनी ही कम है। जिन्होंने उनके मुख-मंडल को देखा है, उनसे पूछिये कि वे कुदरत की क्या कमाल थी! उनको देख कर तो महा अज्ञानी भी कह उठता था – ''माँ, ओ माँ! तेरी ठण्डी छाँ! तेरी शीतल बाँ! तेरी हाँ में हाँ, ओ माँ! तू ले जा चाहे जहाँ, हमें दिखता आसमाँ, भूल गया जहाँ! माँ ओ माँ!'' कैसी थी वो भीनी-भीनी मुसकराहट जिसे शिवपिता और ब्रह्माबाबा ने ज्ञान-रंग से चित्रांकित किया! उस मुसकराहट को देख कर तो रोना सदा के लिए बन्द हो जाता। वे निर्मल नैन जिनसे योग-तपस्या की प्रकाश-रश्मियाँ जिस पर पड़तीं, उसे भी योग के पंखों पर बिठा कर फ़र्श से अर्श पर ले जातीं। उनका डील-डौल ही ऐसा था कि वे एक अहिंसक सेना की सेनापति दिखाई देती थीं। उनकी चाल-ढाल ही ऐसी थी कि जिसमें 'योग' और 'राज' मिलकर उसे इतना भव्य, दिव्य, सुसभ्य बनाते थे कि बात मत पूछो। जिस किसी को भी उनका स्पर्श मिला, उसने अनुभव किया कि उसकी ऐन्द्रिय चंचलता शान्त हो चली। जिस समय किसी ने उनके कमरे में प्रवेश किया तो देखा कि वे समाधिस्थ हैं, तपस्यारत हैं अथवा हंस-माता के रूप में ज्ञान-रत्नों को धारण किये हैं। क्या जादू था उनकी तस्वीर में! क्या सुगन्ध थी उनके व्यवहार में! कैसी महक थी

अमृत-सूची

- कर्मों का खाता *(सम्पादकीय)* 5
- मातेश्वरी नन्हीं-सी बच्ची 7
- मम्मा के मस्तक में आत्मा 10
- जगदम्बे जगत जननी *(कविता)* 10
- ईश्वरीय कारोबार में.....11
- मैं मम्मा से वचनबद्ध हुई 14
- 'पत्र' संपादक के नाम 16
- परमात्म शक्ति द्वारा 17
- शिव ज्ञान सागर 19
- दूसरों के दर्द मिटाने से.....20
- आँखों में पानी 21
- भक्ति से ज्ञान तक 22
- सदा शक्तिशाली कैसे बनें ...24
- मीठी मम्मा *(कविता)* 25
- जीवन हो तो ऐसा 26
- बाबा ने बनाया डबल डॉक्टर .27
- आबू में रक्त संचय 28
- जगदम्बा माँ *(कविता)* 29
- सचित्र सेवा समाचार 30
- ईश्वर का बच्चा होने का 32
- क्या खूब कहा *(कविता)*..... 32
- जानिए पीस ऑफ माइंड 33
- बीमारी में बाबा की मदद 34

सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	100 /-	2,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	100/-	2,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	1,000 /-	10,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	1,000/-	10,000/-

शुल्क केवल '**ज्ञानामृत**' अथवा '**द वर्ल्ड रिन्युअल**' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

शुल्क के लिए सम्पर्क करें -
09414006904, 09414423949
hindigyanamrit@gmail.com

उनके कर्मों में! जिसने उन्हें परिचय-युक्त दृष्टि से देखा, उसका तो जीवन ही सफल हो गया। अत: हम सभी का सौभाग्य है कि हम ब्रह्माकुमार या ब्रह्मा-वत्स भी हैं और सरस्वती-पुत्र अथवा सरस्वती-पुत्री भी हैं। लोग जिस देवी को विद्यादायिनी के रूप में विद्या का वरदान पाने के लिए पुकारते हैं, स्वयं उन्हीं के पुनीत हाथों से हमने अमृत पीया, स्वयं उनकी मुख-वीणा से ज्ञान की स्वर्ग-सुखदायिनी झंकार सुनी। उनके वरद् हाथों ने हमारे सिर पर प्यार बरसाया। उनकी ज्ञानमयी गोद के हम सुत हैं। हमारे इन नेत्रों ने सरस्वती को इस धरा पर खड़े, बैठे, चलते देखा। हमने यदि और कुछ भी न पाया हो तो यह जो देखा और पाया, क्या यह कम बात है? संसार में इससे अधिक सुन्दर दृश्य और कोई हो सकता है क्या? ज़मीन-आसमान सूक्ष्म-दिव्य नाद करते थे जब वे चलती थीं। चंदा भी देर से जाता था जब वो रात-रात भर शिवपिता को याद करती थीं। अरे, वे ही तो पार्वती थीं जिन्होंने पर्वत पर तपस्या की शिव के लिये। गौरी वे ही तो थीं। हिमराज की वह पुत्री ज्ञान-गुण की दृष्टि से अपार सुन्दर थीं। जिसने उन्हें साक्षात् नहीं देखा, उसने क्या देखा? जिसे संसार आदि-देवी, अम्बे मैय्या, ईव, हव्वा इत्यादि नामों से याद करता है, उन्हें देखने का यही तो मौका था। हम उनके संग-संग रहे, उनके हाथों से पले, उनकी छत्रछाया में खेले। वे दिन कितने निराले थे! वह हमारे सौभाग्य की कितनी सुन्दर घड़ी थी। उस-जैसा रोमांचकारी अनुभव तो और कोई हो ही नहीं सकता। भारत और भारत की नारी की वे शान थीं! योगियों में वे सर्व महान थीं, धर्म-दर्शन-मज़हब और ईमान थीं। वे मादर-ए-ज़हान (World Mother) थीं। वे न होतीं तो कुछ भी न होता। वही तो प्रजापिता ब्रह्मा के मुख द्वारा परमात्मा शिव का ईश्वरीय ज्ञान सुनाकर सभी यज्ञ-वत्सों को समझाती थीं। वही तो उनके सामने ज्ञान एवं योग का नमूना थीं। सभी यज्ञ-वत्सों को संभालने के लिए वही तो निमित्त थीं। उन्हें प्रजापिता ब्रह्मा के समकक्ष स्थान पर बैठकर प्रतिदिन ज्ञान-वीणा वादन का अधिकार था।

उन्हीं मातेश्वरी सरस्वती ने दुर्गा का रूप धारण करके यज्ञ-दुर्ग की रक्षा की, विघ्नों का सामना किया। जनता और सरकार द्वारा आई विपत्तियों को झेला। भिन्न-भिन्न संस्कारों वाले यज्ञ-वत्सों को संस्कारों की भट्ठी में से उन्हीं ने ही उज्ज्वल किया और एक-एक को ज्ञान-लोरी, ज्ञान-पालना दी। वही तो प्रथम शीतला माँ, सन्तोषी माँ और अन्नपूर्णा माँ थीं।

स्वयं प्रजापिता ब्रह्मा उन्हें माला के युग्म मणके में स्थान देते, उन्हें 'यज्ञ-माता' की उपाधि देते तथा आदरणीया मानते थे। उन्हीं को आगे रख कर वे उदाहरण देते थे कि सभी ''पुरुषों'' को चाहिए कि बहनों-माताओं को आगे रखें। बाबा स्वयं कई बार उन्हें रेलवे स्टेशन तक छोड़ने जाते। एक बार उन्होंने कहा कि छोटी-छोटी, पतली-पतली कुछ लकड़ियाँ चुनकर ले चलो तो माता जगदम्बा को अर्पित करना और सभी मिलकर माँ की महिमा का गीत गाना। उन्होंने मुझसे कहा, ''बच्चे, क्या तुम जगदम्बा की महिमा का गीत जानते हो और आरती कर सकते हो?'' मैंने कहा कि ''कुछ तो याद है''। तब हमने ऐसा ही किया। हम काठियाँ चुन कर उनका गट्ठा बना कर ले गये। उस दिन माँ हमारे साथ घूमने नहीं गई थीं। जब हम पाण्डव भवन पहुँचे तो माँ वहाँ बाबा की आगवानी के लिये खड़ी थीं। हमने वह गट्ठा उनके चरणों में निकट रख कर, हाथ जोड़ कर, अर्ध-खुले नेत्रों से और भाव-विभोर होकर उनकी आरती करनी शुरू कर दी। अचानक ही यह देखकर माँ मुसकरा रही थीं और कुछ हँस भी रही थीं.....। अरे, बस आनन्द आ गया! हमारी भक्ति पूरी हो गई। हमने भक्ति को माँ सरस्वती को समर्पित कर दिया। वह ऐसा दृश्य था कि उसका

(शेष..पृष्ठ 16 पर)

सम्पादकीय ..

कर्मों का खाता

कई लोग सवाल उठाते हैं कि अच्छे लोगों पर कष्ट क्यों आते हैं, भगवान उन्हें कष्ट क्यों देते हैं? पहले तो हम यह जान लें कि भगवान कष्ट मिटाने वाले हैं, कष्ट देने वाले नहीं। रही बात अच्छे लोगों पर कष्ट आने की तो इसका उत्तर यह है कि उन्हें और अच्छा बनाने के लिए ही कष्ट आते हैं।

मनोबल अधिक तो कष्ट खेल लगते हैं

हम पहनने के कपड़े भी धोते हैं और पोंछे को भी लेकिन पहनने वाले कपड़ों को बहुत रगड़ते हैं और पोंछे को यूँ ही पानी में से निकालकर सुखा देते हैं, कोई रगड़ाई नहीं। कारण यह है कि पहने जाने वाले कपड़ों को तो साफ-सुन्दर रखना है और पोंछे को तो वैसा ही रहना है। जिन्हें आगे बढ़ना है, ऊँचा चढ़ना है उन्हें रगड़ सहन करनी पड़ती है, जिन्हें सम्पूर्ण बनना है उन्हें कष्ट आते ही हैं पर उनका मनोबल इतना अधिक होता है कि उन्हें कष्ट, कष्ट लगते ही नहीं, खेल लगते हैं। साधारण व्यक्ति को वे कष्ट लगते हैं।

ईश्वरीय कर्त्तव्यों की यादगार पाण्डवों और कौरवों की कहानी को देखिए। पाण्डव भगवान से प्रीत बुद्धि हैं, चरित्रवान हैं और सहनशील हैं पर उन्हें राज्य में से अपना हक भी नहीं मिलता, परिवार के बड़ों का समर्थन भी नहीं मिलता और जिन प्रभु को वो दिन-रात याद करते हैं वे भी उनके कष्टों को कहीं भी कम करते नज़र नहीं आते। दूसरी तरफ दुर्योधन नास्तिक है, चरित्रहीन और अन्यायी है फिर भी पिता के राज्य में हर अधिकार उसे प्राप्त है, भविष्य का राजमुकुट भी उसी के सिर आने की सम्भावना है। राज्य के खज़ाने का और प्रजा का वह मनमाने ढंग से दुरुपयोग करता है। परिवार के मुख्य ताकतवर बड़ों का उसे पूरा सहयोग मिलता है और भगवान भी उसे उसके पापों का कोई फल देते हुए नज़र नहीं आते हैं।

परिस्थिति एक परीक्षा है

आज भी गिने-चुने लोग पाण्डवों जैसी स्थिति में और अधिकतर लोग कौरवों जैसी स्थिति में जीते हुए मिल जाएंगे। इन दोनों प्रकार की स्थितियों के पीछे कर्मों की गहन गति को समझना अनिवार्य है। एक अच्छे व्यक्ति से उसका हक या पद छीना जाता है, यह उसके सामने एक परीक्षा है। देखना यह है कि वह इस परीक्षा को अपने आन्तरिक गुणों को सुरक्षित रखते हुए पार करता है या आसुरी अवगुणों का सहारा लेकर बदले पर उतर आता है। यदि आन्तरिक गुणों को और प्रभु के सहारे को नहीं छोड़ता और आसुरी बल को नकार देता है तो बाहरी दृष्टि से अपने हक से परित्यक्त दिखता है पर अन्दर ही अन्दर उसका पुण्य का खाता बढ़ने लगता है। भगवान भी उसके बढ़ते हुए पुण्य को देख प्रसन्न होते हैं और ऐसी गुप्त मदद करते हैं जो सांसारिक धन, वैभव तथा आराम के रूप में नहीं दिखती पर अन्दर ही अन्दर वह आत्मा शक्तिशाली तथा अनुभवी बनती जाती है। संसार को तो यह दिखता है कि इस सच्चे व्यक्ति को भगवान ने मदद क्यों नहीं दी पर वह सच्चा व्यक्ति स्वयं यह महसूस कर रहा होता है कि भगवान से जो ज्ञान, प्यार, सहयोग और गुप्त बल सहज रूप से मिल रहा है उसी की तरफ मन, बुद्धि लगाने में भलाई है। इस प्रकार की ऊँची सोच, ईश्वरीय प्रेम और हक छीनने वालों के प्रति भी मन में घृणा या बद्दुआ न रखने के कारण वह पुण्यों का धनी बनता जाता है।

बद्दुआएँ कर देती हैं अस्थिर

दूसरी तरफ जिन्हें आसुरी बल से राज्याधिकार मिल जाता है वे इन्हीं शक्तियों के सहारे राज्य का संचालन भी करने लगते हैं। राज्य छीन लेना तो अल्पकाल की घटना है पर आसुरी

शक्तियों के सहारे राज्य को दीर्घकाल तक चलाना सम्भव नहीं है। यह सत्य तथ्य है कि तप से प्राप्त चीज़ का संचालन भी तप के साथ होता है और पाप से प्राप्त चीज़ का संचालन भी पाप से होता है। जिनसे राज्य छीना वे तो सहनशील थे, चुप रहे पर जिन पर राज्य करना है, उन पर आसुरी शक्तियों के प्रयोग से असन्तोष फैलता है। इस प्रकार प्रजा की और तथाकथित बड़ों की भी बद्दुआएँ इन आसुरी बल वालों को अन्दर से चिन्तित, परेशान, अवसाद-ग्रस्त, क्रोधित, कामी और अस्थिर कर देती हैं। वे निरन्तर डगमगाती गद्दी पर बैठे भय से कांपते रहते हैं। अपनी आन्तरिक अस्थिर हालत को छिपाने के लिए बाहरी संसाधनों, वैभवों का दुरुपयोग करते हैं और विलासिता का आवरण ओढ़ कर रखते हैं, इस प्रकार पापों से उत्पन्न अशान्ति को मिटाने के लिए और ज्यादा पाप करते हैं और पाप का घड़ा तेजी से भरता जाता है।

सबकुछ मिल जाता है अच्छाई पर दृढ़ रहने से

अब देखिए, अच्छे लोगों का पुण्य का खाता जमा हो रहा है इसलिए वे अच्छाई के मार्ग पर दृढ़ रहने के लिए हर कठिनाई सहेंगे क्योंकि उन्हें पुण्य के बल से अखण्ड विजय प्राप्त होने का सृष्टि-ड्रामा का अटल विधान है। दूसरी ओर, पापियों के पाप का घड़ा भर रहा है, वे घृणित से घृणित कर्म करते हुए भी नहीं हिचकिचाएंगे, वे हर पाप करेंगे, क्योंकि इसी से पाप का घड़ा जल्दी भरेगा, फिर फूटेगा और फिर समूल नाश होगा। इस नाश के बाद ही अच्छे लोगों को निर्विघ्न हक मिलेगा। **अत: अच्छाई पर दृढ़ रहने वाले को सबकुछ मिलता है पर धैर्य रखना पड़ता है। बुराई के मार्ग पर चलने वाले को जल्दी में जो कुछ मिलता है वह उसे नष्ट करता हुआ स्वयं भी नष्ट हो जाता है।**

पाप कर्म का फल है दुख

हमने धोबी को कपड़े धोते देखा है, वह जिस कपड़े को धोता है, उसे माथे से ऊपर अधिक ऊंचा उठाता है। कपड़ा समझता है कि वह मिट्टी से काफी ऊपर उठ गया है, हवा में उड़ रहा है और थोड़ी देर आनंद भी पाता है किन्तु वह यह नहीं समझता है कि उसे जितना ही ऊपर उठाया गया है, उतने ही जोर से धोने के पत्थर पर धोबी पटकेगा भी। जो पाप करते हैं वे भी सोचते हैं – अरे! दूसरों को दबाकर, सताकर, हक छीनकर हम भी ऊपर उठ गए परन्तु जब पाप का प्रतिफल भोगते हैं तब दुख में डूब जाते हैं पत्थर पर पटके गए धोबी के कपड़े की तरह। बुरे कर्म करके मनुष्य इतराता है किन्तु उनका भोग शुरू हो जाने पर पछताता है।

पुण्य कर्म बनते हैं निमित्त भाव से

मनुष्य के रोजाना की जीवन-चर्या के कर्म व्यापार की तरह हैं। जैसे माता-पिता अपने बच्चों को पढ़ाते हैं, तो क्या हुआ उनके भी माता-पिता ने उनको पढ़ाया होता है। माता-पिता अपने बच्चों के लिए मकान बनाते हैं, तो क्या हुआ, बच्चे भी तो अपने बच्चों के लिए मकान बनवा ही देंगे। माता-पिता अपने बच्चों की शादी कराते हैं, तो बच्चे आगे चलकर अपने बच्चों की भी शादी कराते हैं। कहने का भाव यह है कि ये जो हमारे कर्म हैं वो हमारे कर्त्तव्य हैं, इनके करने से पुण्य कर्म जमा नहीं होते हैं। पुण्य कर्म वो हैं जो निमित्त भाव से, निमित्त बनकर, नि:स्वार्थ भाव से किये जाते हैं। जो कर्म सर्व के कल्याण के लिए ईश्वरीय मर्यादाओं, धारणाओं में रहते हुए, सदाचार, संयम का पालन करते हुए किए जाते हैं, वे ही पुण्य कर्म हैं। उन्हीं से पुण्य का खाता जमा होता है अन्यथा खाली का खाली रह जाता है।

रामचरितमानस में कहा गया है,

कर्म प्रधान विश्व रचि राखा,
जो जस करहिं सो तस फल चाखा।

विश्व को राम प्रधान नहीं कहा है, कर्म प्रधान कहा है। जीवन में परिणाम इस बात से नहीं आते कि हम क्या और कितना जानते हैं, परिणाम आते हैं कि हम करते क्या-क्या हैं।

– ब्र.कु. आत्म प्रकाश

मातेश्वरी नन्हीं-सी बच्ची भी और जगदम्बा माँ भी

● दादी जानकी

मम्मा को हम ईश्वरीय ज्ञान में आने से पहले से ही जानती थीं लेकिन जैसे कुमारका दादी (दादी प्रकाशमणि) की उनके साथ फ्रेंडशिप (मित्रता) थी, वैसे नहीं थी। वे दोनों उम्र में मेरे से छोटी थी। मम्मा बहुत एक्टिव (चुस्त) थी, वह हम लोगों से न्यारी थी परन्तु जब ॐ मंडली में पहली बार हमने देखा तो बहुत आश्चर्य हुआ। वह सफ़ेद फ्राक पहने हुए थी। अन्य बहनों की भेंट में मम्मा बहुत चमकती हुई नज़र आती थी। ॐ मंडली में आते ही उनका परिवर्तन देख सबको अच्छा भी लगा और आश्चर्य भी हुआ। जब मैं कराची में आयी तो किसी ने मेरे से पूछा, तुमने मम्मा को देखा है? मम्मा से मिली हो? मैंने समझा कि बाबा की युगल जशोदा माता के लिए कहा होगा। मैंने कहा, मिल लूँगी लेकिन 2-3 दिन बाद पता पड़ा कि ये लोग मम्मा किसको कहते हैं।

ज्ञान सुनाती थी अपने में समाकर

एक-दो साल में मम्मा में जो परिवर्तन आया वो बहुत विचित्र बात थी। मम्मा के नयन, मम्मा के बोल, मम्मा का व्यक्तित्व – ये सब अलौकिकता में परिवर्तित हो गये थे। जब मम्मा ज्ञान सुनाती थी तो लगता था कि यह सिर्फ़ बाबा का सुनाया हुआ ज्ञान नहीं सुना रही है बल्कि उसको अपने में समाकर सुना रही है। एक दिन मम्मा को कुँज भवन की छत पर देखा था। मम्मा के कमरे के पास आँगन था। जब भी मैं मम्मा को देखती थी तो वह या तो छत पर या आँगन में कुर्सी पर बैठ चांदनी में बाबा से योग लगाते हुए दिखायी पड़ती थी। मम्मा को तपस्या करते हुए देख मुझे प्रेरणा मिलती थी।

मातेश्वरी के साथ दादी जानकी एवं अन्य बहनें

सबके प्रति प्यार और रिगार्ड

मम्मा जब मुरली चलाती थी तो हम लोग ऐसे तन्मय होकर सुनते थे कि मूर्तिवत् हो जाते थे। मुरली डेढ़ घण्टा चलती थी तो हम भी एकाग्रता से बैठ सुनते थे। मम्मा की मुरली बहुत प्यारी होती थी। पूरे यज्ञ में देखा जाए तो मम्मा बहुत कम बात करती थी। मम्मा का यह गुण मुझे बहुत अच्छा लगता था। उस समय मैं भी बहुत कम बात करती थी। अन्तर्मुखता की यह प्रेरणा मैंने मम्मा से प्राप्त की। दूसरों के साथ बहुत कम सम्बन्ध रखती थी। कभी-कभी दीदी के साथ थोड़ी-बहुत बातें करती थी। बातों-बातों में मैंने दीदी से कहा था कि मैं मम्मा से डरती हूँ, इसीलिए नहीं कि मैंने कोई ग़लती की थी लेकिन ऐसे ही उनके पास जाने में थोड़ी झिझक होती थी। यह मम्मा को मालूम पड़ा। एक दिन मम्मा ने मेरा हाथ पकड़ा और कहा – क्या जनक तुम मेरे से डरती हो? मैंने कहा, डरती नहीं हूँ लेकिन कभी बात नहीं करती हूँ ना इसीलिए ऐसा कहा था। मम्मा ने कहा, अच्छा, चलो आज आपसे ज्ञान की रूहरूहान करेंगे। मम्मा हरेक के साथ इतना प्यार से और रिगार्ड से बात करती थी कि सबका मन भर आता था।

बोल से नहीं, कर्म से सीख

मम्मा कहती थी कि जो ग़लती एक बार कर दी वो दूसरी बार नहीं होनी चाहिए। मैंने यह गाँठ बाँध ली कि मैं मेरा रिकॉर्ड ऐसा रखूँ जो दुबारा मम्मा से शिक्षा लेनी न पड़े। मम्मा कभी भी कोई कार्य बोल कर नहीं सिखाती थी, खुद करके सिखाती थी। एक बार हम सुबह 4 बजे नहीं उठे थे क्योंकि लौकिक जीवन में तो हम जल्दी उठते नहीं थे। ॐ मंडली में

आने के बाद ही सुबह जल्दी उठना सीखा। मम्मा चार बजे आकर देखती थी, कोई नहीं उठा तो वे धीरे-धीरे सीढ़ी उतरकर किचन में चली जाती थी। किसी-न-किसी को पता पड़ जाता था तब वह कहता था, मम्मा देख कर गयी। तो हम सब उठकर तैयार हो जाते थे और मम्मा के सामने जाकर खड़े हो जाते थे। तब मम्मा मुसकराकर कहती थी, ''देखा, आपके मंदिरों में भक्त उठकर घंटी बजा रहे हैं, आप देवता सोये पड़े हैं!'' तब से लेकर आज तक मैं अमृतवेले नहीं सोयी हूँ।

ईश्वरीय स्मृति में भोजन

भोजन क्या है, कैसा है – मम्मा यह कभी नहीं देखती थी। जो मिला उसी को प्यार से स्वीकार कर लेती थी। कभी यह नहीं कहा कि आज नमक कम है, ज़्यादा है, आज सब्जी अच्छी नहीं है! खाने के समय मम्मा कभी इधर-उधर नहीं देखती थी। ऐसे चुपचाप बैठी, खाया और चली गयी। भोजन को प्रसाद के रूप में स्वीकार करती थी।

मम्मा के सामने बाबा कुछ भी बात कहे, कुछ भी सुनाये, मम्मा कभी क्यों, कैसे – यह नहीं सोचती थी। सदा 'जी बाबा', 'हाँ जी बाबा' कहती थी। इतना रिगॉर्ड था उनका बाबा के प्रति! मैं जब पूना में थी तब मम्मा हमारे पास तीन बार आयी थी। बाबा के हर बोल पर मम्मा का अटूट विश्वास था। एक बार किसी ने मम्मा से पूछा, मम्मा, पहले बाबा कहते थे कि जहाँ जीत वहाँ जन्म। आजकल बाबा उसके बारे में कुछ बोलते नहीं, आपका क्या विचार है? तब मम्मा बोली, मेरा विचार कहाँ से आ गया? जो बाबा ने कहा है वही हम सबका विचार है। मम्मा ने कभी अपनी बुद्धि का अभिमान नहीं दिखाया।

मनजीत मम्मा

पूना में ही और एक बार मम्मा से किसी ने पूछा था, मम्मा, आप मन को शान्त कैसे रखती हैं? तब मम्मा ने कहा, यह मन तो हमारा छोटा बेबी है, मैं उसको कह देती हूँ कि अभी तुम शान्त रहो, जब ज़रूरत पड़ेगी तब मैं तुमको बुला लूँगी, वह चुप बैठ जाता है। ऐसे मम्मा मनजीत थी! यह कराची की बात है, मम्मा ऑफिस में बैठी थी तो मैंने जाकर पूछा, ''मम्मा हम क्या पुरुषार्थ करें?'' तब मम्मा ने कहा, ''सदैव समझो यह मेरी अन्तिम घड़ी है।'' वो दिन और आज का दिन मम्मा का वो मन्त्र मुझे भूला नहीं है कि हर घड़ी अन्तिम घड़ी है और मुझे बाबा की याद में रहना है।

गुप्तगामिनी सरस्वती माँ

मम्मा ने कभी अपना शो (दिखावा) नहीं किया। वह कितनी सेवा करती थी लेकिन कभी अपने मुँह से कहा ही नहीं कि मैंने इतनी सेवा की। मम्मा डेढ़ मास सेवा करके बैंगलूरू से पूना आयी थी। उन्होंने बहुत सेवा की थी परन्तु फिर भी नहीं सुनाया कि यह-यह करके आयी हूँ। जो भाई उनको लेने गया था उसी ने थोड़ा सुनाया था। जब हमने मम्मा से पूछा, तो उन्होंने कहा – सेवा अच्छी थी। इतना ही कहा, इससे ज़्यादा कुछ नहीं कहा। इस प्रकार, मम्मा अपने बारे में, किये हुए कार्य के बारे में कभी दूसरों को नहीं बताती थी। वे जितनी त्यागी थी, उतनी ही वैरागी थी और उतनी ही तपस्वी थी। मम्मा को मैंने राधे के रूप में भी देखा, सरस्वती के रूप में भी देखा, काली के रूप में भी देखा और जगदम्बा के रूप में भी देखा।

शिक्षा देने की गज़ब की विधि

बाबा, सभा में अर्थात् क्लास में सभी के सामने ही समझानी देते थे। किसी को व्यक्तिगत रूप में शिक्षा देनी होती तो उनको बाबा पत्र लिख देते लेकिन मम्मा का समझाने का तरीक़ा अलग था। मम्मा उस वत्स के कानों में कह देती थी अथवा इशारा कर देती थी और बहुत प्यार से कहती थी। ऐसे नहीं कि किसी की सुनी-सुनायी बातों के आधार पर मम्मा उसको शिक्षा देती थी। मम्मा समय देकर, उसको प्यार से समझाती थी और गज़ब की बात यह होती थी कि मम्मा उस व्यक्ति को भी महसूस नहीं होने देती थी कि मम्मा मुझे किसी के कहे अनुसार शिक्षा दे रही है। मम्मा की शिक्षा को हरेक यज्ञवत्स अपनी माँ की ही शिक्षा समझता था। हरेक को

लगता था कि मम्मा जो भी हमें कह रही हैं, हमारी भलाई के लिए। बाबा की शिक्षा बहुत शक्तिशाली होती थी, उसको सुनने और समझने की शक्ति चाहिए। शक्तिशाली आत्मा ही बाबा की शिक्षा हज़म कर पाती थी। इस कारण, आमतौर पर किसी बच्चे को समझाना हो तो बाबा सीधा उस बच्चे को नहीं बोलते थे लेकिन उस बच्चे के सामने ही मम्मा को कहते थे। तो वह बच्चा समझ लेता था कि मेरे कारण मम्मा को इतनी सारी बातें सुननी पड़ीं। फिर वही मम्मा से अपनी ग़लती कबूल करता था और आगे के लिए ध्यान रखता था।

सभ्यता-संस्कृति की जननी

मम्मा ने कभी बाबा को साधारण समझा ही नहीं। बाबा की हर बात को पूर्णत: सम्मान दिया और सम्मान देकर उसका पूरा परिपालन किया। कई बच्चे बाबा की बात को बहुत साधारण रूप में लेते थे, तो मम्मा सब बच्चों को बिठाकर समझाती थी कि बाबा को साधारण समझने की कड़ी भूल कभी नहीं करना। बाबा का एक-एक बोल बहुत मूल्यवान है। ऐसे कह कर हमें सभ्यता और अनुशासन सिखाती थी। मम्मा का बोलने का तरीक़ा बहुत सम्मान, प्यार और मिठास वाला होता था। हमें मम्मा ने रीति-रिवाज, सभ्यता-संस्कृति सिखाकर लायक बनाया और एक माँ का पार्ट बजाया और हम बच्चों का गुणों से शृंगार कर बाप के सामने रखा।

मम्मा यज्ञमाता कैसे बनी?

मम्मा को मैंने जब से देखा तब से उनमें श्री लक्ष्मी के सब लक्षण स्पष्ट रूप में दिखायी पड़ते थे। मम्मा सर्व दैवीगुणों से सम्पन्न थी। मम्मा को देह से न्यारी होने के अभ्यास पर बहुत ध्यान रहता था। अशरीरी बनने का जो अभ्यास मम्मा का था वो हम सब के सीखने लायक था। मम्मा के सामने कोई भी आता कुछ बात करने के लिए तो उसकी आवाज़ ही बन्द हो जाती थी अथवा ज़्यादा बोल नहीं पाता था।

प्यूरिटी की पर्सनैलिटी, रॉयल्टी, त्याग, फ़र्ज-अदाई में मम्मा सदा नम्बरवन थी। इतनी छोटी आयु में इतना बड़ा परिवर्तन अपने में कर लेना – यह बहुत बड़ी विशेषता थी। मम्मा ने, बाबा की वफ़ादार बेटी बन कर्त्तव्य निभाने का और हम सब यज्ञवत्सों की अलौकिक माँ बन कर फ़र्ज-अदाई का – दोनों पार्ट बजाये। मम्मा के मुख से जो वाक्य निकलते थे, राय-सलाह निकलती थी, सुनने वालों के लिए वे सब वरदान बन गये। सबको अनुभव होता था कि इसमें मम्मा का कोई स्वार्थ नहीं, वो तो हमारी भलाई के लिए ही इतनी मेहनत कर रही है। मम्मा को दादा-परदादा की आयु वाले भी माँ कहते थे, अपनी हित-चिन्तक समझते थे। एक आदर्श माँ का काम होता है बच्चों को गुणवान बनाना और सभ्यता सिखाना। यह फ़र्ज मम्मा ने पूरा निभाया।

मम्मा का रूहानी रूप

मम्मा रोज़ मुरली ज़रूर पढ़ती थी अथवा टेप द्वारा सुनती थी। भले ही रात के 11 बजे हों लेकिन कल की मुरली सुनकर ही मम्मा सोती थी। जितनी अपने कर्त्तव्य पर पक्की रही उतनी ही ईश्वरीय पढ़ाई पर भी पक्की रही। हॉस्पिटल में भी मम्मा रोज़ मुरली सुनती थी। हमने मम्मा को सदा अलर्ट और एक्यूरेट (Alret and Accurate) देखा। हमने कभी भी मम्मा की आंखें थकी हुई नहीं देखी। सदा उनके नयन बाबा की याद में मगन देखे। मम्मा में नम्रता इतनी थी कि जब बाबा कहते थे – मात-पिता का याद-प्यार और नमस्ते, तब मम्मा अपने को माता नहीं समझती थी। ऊपर इशारा करते हुए कहती थी कि उस मात-पिता का याद और प्यार है। मम्मा केवल ज़िम्मेवारी निभाने में, पालना देने में अपने को माता समझती थी। मम्मा ने माँ का पद स्वीकार नहीं किया परन्तु माँ का कर्त्तव्य स्वीकार कर उसको पूर्णरूपेण निभाया। बाबा के सामने वह एक छोटी, नन्हीं-सी बच्ची का रूप धारण कर लेती थी और यज्ञवत्स और भक्तों के सामने आदिदेवी जगदम्बा माँ का रूप धारण कर लेती थी। इतनी महान थी हमारी माँ सरस्वती। ❖

मम्मा के मस्तक में आत्मा रूपी मणि चमकती थी

● दादी हृदय मोहिनी

छोटी आयु होते भी मम्मा को सब माँ-माँ कहने लगे, तो मम्मा की स्थिति क्या होगी? मम्मा ऐसी न्यारी और प्यारी थी जैसे कोई कराने वाला करा रहा है, वे नहीं कर रही हैं। न्यारापन हमेशा प्यारा होता है। मम्मा सबकी प्यारी थी।

ड्रामानुसार मम्मा की शक्ल ऐसी थी जो उनके मस्तक से लाइट जैसे दिखाई देती थी। लाइट और माइट जिनमें होगी उनकी सूरत, चलन क्या होगी आप खुद समझ सकते हो। मम्मा को कहना नहीं पड़ता था कि आत्मा को देखो लेकिन मम्मा के मस्तक में देखते ही आत्मा की अनुभूति होती थी। कोई स्थूल में ऐसी लाइट नहीं दिखाई देती थी लेकिन पवित्रता की जो शक्ति थी वो आकर्षित करती थी। मम्मा ने कितनी कुमारियाँ सम्भाली। मम्मा में सहनशक्ति कितनी होगी! बातें तो होंगी ना क्योंकि हम लोग तो घरों से नये-नये आये थे। कोई ज्ञान लेके थोड़ेही आये थे? घरों से आते हैं तो हर एक के संस्कार भिन्न-भिन्न तो होते हैं ना, भिन्न-भिन्न स्थानों से, भिन्न-भिन्न संस्कारों वाले आये लेकिन मम्मा की पालना बहुत सुन्दर थी। मैं मिसाल सुनाती हूँ, मानो हमारे से कोई ग़लती हुई, हम छोटे-छोटे ही तो थे। मेरे से ग़लती कम होती थी लेकिन समझो कोई से ग़लती हुई तो रिपोर्ट तो मम्मा के पास जाती ही थी।

मम्मा कभी भी सीधा यह नहीं कहती थी कि तुमने यह ग़लती की, तुमको समझ नहीं है। ऐसे शब्द वो नहीं कहती थी। मम्मा यही कहती थी, बच्ची, तुम्हारे में तो बहुत गुण हैं, पता है क्या-क्या गुण हैं? फिर मम्मा गुण सुनाती थी, तुम्हारे में तो यह है, तुम्हारे में तो यह है, ऐसे गुणों की महिमा करके कहती थी, इतने गुण हैं, अभी एक छोटी-सी बात है, इसको खत्म नहीं कर सकती हो? गुणों के आगे यह क्या है? कुछ नहीं है। यह तो गयी कि गयी। तो प्यार से पहले उनकी महिमा करके, हिम्मत देके,

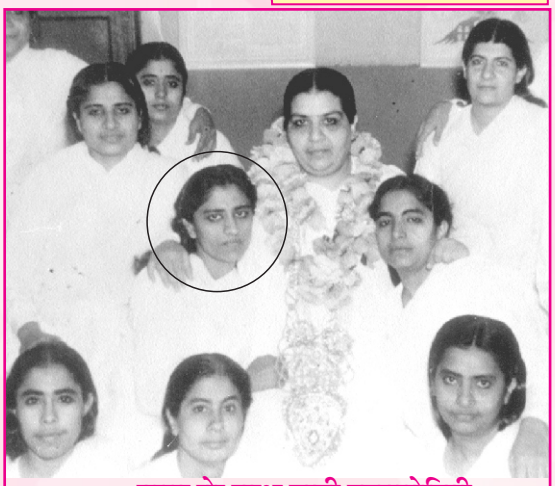

मम्मा के साथ दादी हृदयमोहिनी

करेक्शन करके ऐसा हल्का कर देती थी जो गुणों की धारणा करना मुश्किल नहीं लगता था। उमंग से समझाती थी तो हम समझ जाते थे और लगता था कि बदलना कोई बड़ी बात नहीं है। ❖

जगदम्बे जगत जननी

अल्फाज़ वो कहाँ से, हम ढूँढ़ करके लायें।
जगदम्बे जगत जननी, महिमा तेरी जो गायें।।
तुझे याद कर रहे हैं माँ लाल तेरे सारे,
आजा कहाँ छुपी हैं, हम सब तुझे बुलायें,
वीणा बड़ी मधुर थी, तेरी ज्ञान की भवानी,
झंकार उन सुरों की, कैसे भला भुलायें,
तेरी ज्योति है निराली, तेरी शान है निराली,
सृष्टि रचता ब्रह्मा भी गीत तेरे गायें,
राधा भी तू है मैया और लक्ष्मी भी तू है,
तू है अनेक रूपा, सब तुझको सर झुकायें,
अल्फाज़ वो कहाँ से.....।
जगदम्बे जगत जननी.....।।

– ब्र.कु. वीरेन्द्र भाई, कासगंज

ईश्वरीय कारोबार में आदर्श व्यवस्था संपन्न करने की ज़रूरत – 8

● ब्रह्माकुमार रमेश शाह, मुंबई (गामदेवी)

हम छोटी-सी आत्मा के अन्दर 5000 वर्ष के संस्कार भरे हुए हैं और इन छोटी आत्माओं के द्वारा ही अनेक प्रकार की भाषायें बनी हुई हैं। भारत में 850 भाषायें हैं जिनमें से कई भाषायें प्राय:लोप होती जा रही हैं। बाबा ने हमें बताया है कि भाषा तो सिर्फ भाव व्यक्त करने का साधन है, साध्य नहीं। हमारा प्यारा शिवबाबा साहित्य का स्वामी है अर्थात् भाषा के ऊपर बाबा का प्रभुत्व है। जैसे बाबा ने एक मुरली में कहा है कि आसक्ति से माया आ सकती है, एक अन्य साकार मुरली में कहा है कि सुप्रीम रूह, रूहों से रूहरिहान करते हैं। ऐसे ही एक अन्य मुरली में कहा है कि बाबा DOG को GOD बनाने आते हैं। उसी संदर्भ में मैं भी लिखूँगा कि बाबा हमें MAD से M.D.A. अर्थात् मास्टर ऑफ डिवाइन एडमिनीस्ट्रेशन बनाने आये हैं और उसी दृष्टिकोण से हमारे यज्ञ और पूर्वजों की जीवन कहानी के आधार पर हम सभी सीख सकते हैं। दैवी सुशासन के अनुभवियों द्वारा सीख कर हम अपना भाग्य बना सकते हैं क्योंकि अनुभव द्वारा जो शिक्षा मिलती है वैसी दुनिया में और कहीं भी नहीं मिल सकती।

इतिहास भी अनेक दृष्टिकोण से लिखा जा सकता है। कालक्रम अनुसार मुगल सम्राज्य, मराठा साम्राज्य तथा इंग्लैण्ड के हैनोवर (Hanover) और स्टुअर्ट (Stuart) वंशों का इतिहास है। कई इतिहास गुण और कर्त्तव्य के आधार पर होते हैं जैसे कि रामायण श्रीराम के गुण और कर्त्तव्य पर आधारित है, महाभारत पाण्डवों के गुणों और कर्त्तव्यों पर आधारित है और भागवत श्रीकृष्ण के गुण और कर्त्तव्य पर आधारित है। आदरणीय भ्राता जगदीश जी ने ब्रह्मा बाबा की जीवन कहानी लिखी उसी प्रकार यज्ञ का इतिहास यज्ञ के विकास तथा उसकी क्रमबद्धता के आधार पर लिखा जा सकता है। ऐसे ही यज्ञ में किस प्रकार से अचल सम्पत्ति ली गई उसके बारे में भी लिखा जा सकता है। यज्ञ द्वारा सबसे पहले आबू में पाण्डव भवन खरीदा गया और ट्रस्ट में नक्की लेक के पास का म्यूजियम खरीदा गया। वैसे ही लंदन में सबसे पहले टेनिसन रोड का मकान खरीदा गया। हर मकान लेने के पीछे अपनी-अपनी कहानी है जिसे विस्तार से लिखेंगे तो बहुत बड़ा इतिहास बन जायेगा क्योंकि जिन्होंने अपने मकान सफल किये या मकान लेने के लिए मेहनत की, वे सब उसके बारे में जानते हैं।

इसी प्रकार से दैवी अनुशासन के बारे में प्यारे ब्रह्मा बाबा, बड़ी दादियाँ तथा बड़े भाई-बहनों का जीवन वृत्तांत सुनेंगे तो हमें बहुत कुछ सीखने को मिलेगा। इनके जीवन से प्रेरणा लेकर हम श्रेष्ठ कर्त्तव्य कर अपना जीवन श्रेष्ठ बना सकते हैं। इसी दृष्टिकोण से मैं यह लेखमाला लिख रहा हूँ। इसमें शायद पहले लिखी हुई बातों की पुनरावृत्ति हो सकती है परंतु यह पुनरावृत्ति मेरे विचारों को समझाने के लिए उपयुक्त होगी।

देखा जाये तो मैनेजमेन्ट में कई बातों की जरूरत है। उसमें सबसे पहला गुण है समर्पणता (Dedication)। सन् 1977 में मुम्बई में हमारे ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा एक अंतर्राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस (International Conference) रखी गई थी जिसका शीर्षक था 'Divinize the Man.' मैंने इस विषय पर पेपर प्रेजेन्टेशन किया था – 'समर्पणता द्वारा सम्पूर्णता'। समर्पणता एक बहुत बड़ा महान गुण है और यह गुण वही धारण कर सकते हैं जिनके पास सहनशीलता, नम्रता है और जिनको लक्ष्य के अनुसार समर्पित होने की

भावना हो। दुनिया में भी समर्पण भाव के कारण कइयों ने जीवन का बलिदान किया। जैसे भारत की आजादी के समय भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव ने देशभक्ति की भावना से जीवन का बलिदान दिया। लौकिक जीवन में कई ध्येय प्राप्ति हेतु समर्पित होते हैं, कई संन्यासी बन जाते हैं तथा कई देश-विदेश में परिभ्रमण करते हैं।

प्यारे ब्रह्मा बाबा में समर्पणता के सम्पूर्ण गुण थे। बाबा कोलकाता में हीरे-जवाहरों के बहुत बड़े व्यापारी और डायमण्ड मर्चेन्ट एसोसिएशन (Diamond Merchant Association) के प्रमुख थे। फिर सब कुछ छोड़कर सिंध हैदराबाद में गीता ज्ञान सुनाने लगे। इतना विशाल परिवर्तन केवल समर्पणता के गुण के आधार पर किया।

न सिर्फ उन्होंने यह परिवर्तन किया परंतु उनके परिवार ने भी ऐसा ही विशाल परिवर्तन किया। ब्रह्मा बाबा की लौकिक पत्नी जशोदा माता के हाथ में घर का सारा कारोबार था, उनके नाम पर बाबा ने हैदराबाद में अपने भवन का नाम 'जशोदा भवन' रखा और फिर उसी भवन में रहकर बाबा ने इस यज्ञ की स्थापना की। कितनी भाग्यशाली वह माता रही कि उनके नाम से बना भवन यज्ञ की स्थापना के निमित्त बना। जब ब्रह्मा बाबा ने अपना जीवन यज्ञ में समर्पित किया तब जशोदा माता ने भी अपना जीवन समर्पित किया। जब बाबा ने यज्ञ में सेवाओं की ज़िम्मेदारी सबको बाँटी तो जशोदा माता ने, इतने बड़े घराने की होकर भी अपना अहं मिटाने के लिए, यज्ञ में झाड़ू, पोंछा और बर्तन सफाई की सेवा ली और वैसे ही ब्रह्मा बाबा की लौकिक बेटी दादी निर्मलशान्ता ने भी यज्ञ में बर्तन व गाड़ी साफ करने की सेवा ली। दादी निर्मलशान्ता जी बताते थे कि एक बार कढ़ाई बहुत बड़ी थी जिसे वह अपने हाथों से नहीं साफ कर सकती थी, तो वे कढ़ाई के अंदर जाकर उसे पैरों से साफ करने लगी। इतने में वहाँ बाबा आये और कहा कि बच्ची डांस करना है तो कढ़ाई में क्यों करती हो, स्टेज पर आकर करो। इस प्रकार इन लोगों ने सम्पूर्ण समर्पणता के भाव के आधार पर अपना सारा अहं मिटाकर सेवा की।

ऐसे ही दादी बृजेइन्द्रा जी ब्रह्मा बाबा की पुत्रवधू थी। ब्रह्मा बाबा के बड़े बेटे के साथ उनकी शादी हुई थी। उस समय बाबा ने उन्हें एक रानी के लिए बनाये हुये 3-4 लाख रुपयों के गहने भेंट किये थे।

ब्रह्मा बाबा ने घर पर पत्र भेजा जिसमें लिखा था – 'अलिफ को मिला अल्लाह, बे को मिली झूठी बादशाही, आया तार अलिफ को, हुआ रेल का राही' और उन्होंने अपना सब कुछ शिव बाबा के आगे समर्पण कर दिया। उसी समय दादी बृजेन्द्रा भी स्वेच्छा से समर्पण हो गई। बाबा ने उस समय बीच में एक रूमाल रखा और कहा कि शिवबाबा के यज्ञ में जिसको जो समर्पित करना हो, वह सब कर दो तो दादी बृजेन्द्रा जी ने उसी वक्त अपने सारे गहने उसमें डाल दिये। यह सुनकर मैंने दादीजी से पूछा, दादी जी, आपने अपने इतने बहुमूल्य गहने बाबा के यज्ञ में समर्पित किये तो आपके मन में जरा भी संकोच या शोक नहीं हुआ? दादी जी ने कहा कि शोक की तो बात ही नहीं, मैं तो इन गहनों के बोझ से और ही हल्की हो गई और ऐसा लगा कि जैसे बन्धनों से मुक्त हो गई। इस बोझ से हल्के होने के कारण मेरा योग और ही अच्छा हुआ। यह है धन का और गहनों का समर्पण।

ऐसे ही हमारी परम आदरणीया दादी प्रकाशमणि जी जब पहली बार जशोदा भवन में बाबा की मुरली सुनने आई थी तो मुरली सुनते-सुनते ध्यान में चली गई। मुरली समाप्त हो गई, सब चले गये तो भी उनको पता ही नहीं चला। फिर बाबा ने उन्हें पावरफुल दृष्टि देकर ध्यान से नीचे लाया। दादी जी के लौकिक पिताजी ज्योतिष जानते थे। उन्होंने दादी जी के बचपन में ही जान लिया कि मेरी बेटी अध्यात्म के क्षेत्र में बहुत आगे जायेगी और हमारा नाम रोशन करेगी। इसलिए दादी जी जब यज्ञ में समर्पण

होने आई तब उनके पिताजी ने सहर्ष समर्पण की चिट्ठी दी। दादी जी के शब्दों में, जब से उनके पिताजी ने उन्हें समर्पण की चिट्ठी दी उसके बाद वे कभी भी अपने पिताजी के घर में रात को नहीं रुकी। ज़रूरत होने पर दिन में घर गई पर रात को नहीं रुकी। यह उनका शिवबाबा के प्रति सम्पूर्ण समर्पण भाव था। आज के समय में समर्पित भाई-बहनों को उनके लौकिक में जाने की छुट्टी मिलती है, यह भी एक अलग विशेषता है।

ऐसे ही दादा विश्वकिशोर जी के बारे में भी लिख सकते हैं। वे लौकिक में ब्रह्मा बाबा के भतीजे थे। उनका भी कोलकाता में हीरे-जवाहरातों का धंधा था। वे बहुत अच्छी रीति से अपनी युगल संतरी बहन और बेटे खुशाल के साथ जीवन व्यतीत कर रहे थे। परंतु जैसे ही ब्रह्मा बाबा ने अपना जीवन शिवबाबा के यज्ञ में समर्पित किया तब बाबा ने उन्हें पत्र लिखा। जैसे ही उन्हें बाबा का पत्र मिला उन्होंने अपना धंधा समेट लिया और सिंध-हैदराबाद में आकर यज्ञ में समर्पित हो गये। वे हर समय बाबा के राइट हैण्ड बनकर रहे और अंत तक बाबा के हर कार्य में सम्पूर्ण मददगार बने। मातेश्वरी जी बीमारी के समय मुम्बई में थे। दादा ने मातेश्वरी जी के ऑपरेशन तथा ट्रीटमेंट के बारे में हमारी लौकिक बड़ी बहन डॉ. अनिला बहन के साथ मिलकर सब बातें तय की। दादा, बाबा का भी इतना अधिक ध्यान रखते थे कि जब भी बाबा आबू से मुम्बई जाते थे या मुम्बई से आबू आते थे तो खास रेलवे के बड़े ऑफिसर से मिलकर दिल्ली मेल व गुजरात मेल के ए.सी. डिब्बे (उस जमाने के) देखते थे और उसमें भी यह ध्यान रखते थे कि बाबा की सीट पहिये के ऊपर ना आये ताकि बाबा आराम से सफर कर सकें। मैंने और ऊषा जी ने भी एक बार इसी प्रकार फर्स्टक्लास कैबिन में ऐसी ही सीट पर बैठकर सफर किया तब मालूम पड़ा कि बाबा का सफर सुखमय बनाने के लिए दादा कितनी मेहनत करते थे।

दादा विश्वकिशोर इतने समर्पित बुद्धि के और विश्वासपात्र थे कि बाबा ने उनके नाम पर पाण्डव भवन खरीद किया। परंतु बाद में उन्होंने ही बाबा के पास अर्जी रखी कि बाबा अब तो यज्ञ में अन्य पढ़े-लिखे भाई समर्पित हुए हैं और इसीलिए अब मैं भविष्य की सेवा के प्लानिंग अर्थ नया शरीर धारण करना चाहता हूँ। उनका प्रोस्टेट का साधारण-सा ऑपरेशन मुम्बई में हुआ। उनकी इच्छा थी कि आप्रेशन की टेबल पर ही उनका शरीर छूटे और वे भविष्य की सेवाओं के लिए जायें। जब उन्होंने शरीर छोड़ा था तब अव्यक्त बाबा संदेशी दादी के तन में आये और बाबा ने कहा कि बच्चे की इच्छा तो ऑपरेशन टेबल पर ही शरीर छोड़ने की थी परंतु बाबा ने उन्हें पाँच दिन का जीवनदान देकर शरीर छोड़ने की अनुमति प्रदान की।

जैसे ब्राह्मण जीवन के अंदर पवित्रता आधारस्तंभ है उसी प्रकार से समर्पणता भी आधारस्तंभ है क्योंकि जहाँ समर्पणता नहीं, वहाँ एकाग्रता नहीं हो सकती और जहाँ एकाग्रता नहीं, वहाँ संचालन का कार्य सफलतापूर्वक नहीं हो सकता। समर्पणता के लिए एक स्लोगन याद रखना है, मेरा तो एक बाबा दूसरा न कोई। समर्पण बुद्धि तब सात्विक बनेगी जब बाबा की अव्यभिचारी याद होगी। ❖

लेखकों से निवेदन

- जीवन-अनुभव के लेखों को निमित्त शिक्षिका के हस्ताक्षर के साथ भेजें।
- लेख और कवितायें साफ-साफ लिखें। यदि टाइप कराके भेजना चाहें तो आप पोस्ट द्वारा या ई-मेल gyanamritpatrika@bkivv.org पर भेजें।
- अपनी रचना के साथ अपना पूरा पता, फोन नंबर, ई-मेल, संबंधित सेवाकेन्द्र का नाम, जोन तथा टीचर का नाम भी अवश्य लिखें।
- जो भी रचना भेजें, उसकी एक कॉपी अपने पास अवश्य रखें।

मैं मम्मा से वचनबद्ध हुई

● ब्रह्माकुमारी संतोष बहन, मुम्बई (सायन)

हम दुनिया में बहुतों के सम्पर्क में आते हैं लेकिन उनमें से खास किसी की भी अविस्मरणीय स्मृति नहीं रहती। विरले किसी की स्मृति कभी-कभी ऐसा ठप्पा लगा कर जाती है कि परछाई की तरह साथ रहने लगती है। ऐसी पवित्र आत्मा को भूलना चाहो तो भी असम्भव हो जाता है। मेरे जीवन में भी ऐसी एक आत्मा आयी और मेरा सारा जीवन परिवर्तित हो गया। आप ऐसी पुण्य आत्मा के बारें में अवश्य जानना चाहेंगे। अभी लिखते समय भी मुझे ऐसा अनुभव हो रहा है कि वह पवित्र आत्मा अपने मोहक हर्षित मुखड़े से, स्नेह भरी सुखकारी दृष्टि से मेरी ओर देख रही हैं। वे ईश्वरीय परिवार की अलौकिक देवी माँ थी। उनके लंबे काले बाल, चेहरे को और ज्यादा सुशोभित कर रहे थे। उनके मधुर शब्द आज भी कानों में गूँज रहे हैं। उनके सवाल-जवाब के तरीके शास्त्रों में वर्णित सरस्वती देवी की याद दिलाते। वे ज्ञान-सितार इतनी कुशलता से बजाती और गीत भी इतनी मधुर वाणी से गाती कि सुनने वाले देहभान को भूल जाते थे। मैं आपको ज्यादा सोच में नहीं डालना चाहती हूँ। लगभग 49 वर्ष पहले (1965) का वृत्तांत आपके समक्ष रख रही हूँ –

मम्मा से मिलने में आनाकानी

मेरी बड़ी बहन मुम्बई में रहती थी और प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में जाती थी। मैं छुट्टियों में हमेशा उनके घर जाया करती थी। सन् 1965 में मैंने एस.एस.सी. पास की और आर्ट्स् कॉलेज में प्रवेश लेने के लिए मुम्बई आयी। मैं बहुत खुश थी कि कॉलेज जीवन का आनंद, जो कि मुझे बहुत आकर्षित करता था, लूटने को मिलेगा। कॉलेज में प्रवेश मिलना मेरे लिए एक शुभ घटना थी। प्रवेश लेने के बाद मैं वापस अपने घर जाने की तैयारी कर रही थी। उसी समय मेरी बहन ने कहा, मम्मा (जगत्माता) मुम्बई में आयी हैं और फिर मुझसे आग्रह किया कि उनसे मिलने के लिए चलना ज़रूरी है। मैंने साफ इन्कार करते हुए कहा, मुझे आध्यात्मिक बातों में कोई रस नहीं आता। किसी माता का दर्शन मैं नहीं करना चाहती हूँ, मुझे तो घर जाने की तैयारी करनी है। मेरे इस झूठे सबब (कारण) को जानकर बहन ने मुझसे कहा कि मैं बाद में तुम्हें तैयारी करने में मदद करूँगी। बहन का दिल रखने लिए, दूसरे दिन मैं उनके साथ मम्मा से मिलने गई। मैंने देखा कि बहुत-से

भाई-बहनें मम्मा के इन्तजार में थे। मैं भी वहाँ जाकर बैठ गयी। कुछ समय बीत गया। मैं वापस लौटना चाहती थी क्योंकि मैं किसी भी व्यक्ति का, चाहे वह कितना ही बड़ा क्यों न हो, मिलने के लिये इतना समय इन्तज़ार नहीं कर सकती थी। इतने में किसी बहन ने मुझे मम्मा के कमरे में बुला लिया।

पहला ठप्पा

मम्मा के प्रभावशाली व्यक्तित्व के बारे में मैं पहले ही बता चुकी हूँ। एक छोटी गुड्डी की तरह मैं उनकी ओर देखती रही। मम्मा ने मुझे अपने पास बुलाया और मधुर वाणी से पूछा, बेटी, तेरा नाम क्या है? उनके ये बोल मुझे अमृत जैसे लगे। मैंने कहा, संतोष। तुरन्त मम्मा ने पूछा, क्या तुम सन्तुष्ट हो? मुझे इस बात का पता ही नहीं था कि सन्तुष्ट रहना बहुत जरूरी है। मैं सोच ही रही थी, इतने में मम्मा ने मुझसे मधुर वाणी में कहा, क्या तुम अपने

आपसे सभी बातों में सन्तुष्ट हो? मैंने झट जवाब दिया, नहीं मम्मा, मेरी प्यारी मम्मा, नहीं। मैं असन्तुष्ट हूँ, असमाधानी हूँ। मैंने इतने प्यार से, स्नेह से ''मम्मा'' कहा जैसे कि मैं अपनी ''माँ'' को कहती थी। भले ही मैं अपनी माँ की बहुत प्यारी बच्ची थी लेकिन लौकिक माँ से मम्मा जैसी स्नेहभरी दृष्टि और बच्ची जैसा प्यार अनुभव नहीं किया था। मेरा हाथ अपने हाथ में लेते हुए मम्मा ने पूछा, बेटी सन्तोष, तुझे पता है, सन्तोष देने वाला कौन है? यह मालूम होना चाहिए। मम्मा ने आगे बहुत कुछ कहा लेकिन मैं तो साकारी, विकारी दुनिया को भूल गयी थी, अपनी देह की सुधबुध भी भूल गयी थी और अनुपम सुख की लहरों में लहरा रही थी। मेरी बहन ने मुझे सजग किया। मैं खड़ी हो गयी।

मम्मा ने पुन: मेरा हाथ पकड़ लिया। मुझे पता ही नहीं चला कि मैं बिना सोचे-समझे क्यों अपना हाथ मम्मा को दे रही हूँ। जब मैं अपना हाथ छुड़ा रही थी, तो मम्मा बोली, मेरे हाथ में दिया हुआ हाथ कभी नहीं छोड़ना। बिजली की गति से मैं देहभान में आयी। मैं मम्मा से वचनबद्ध हुई थी यह बात बहुत देरी से मुझे समझ में आयी लेकिन मैं कुछ नहीं बोली। इस अविस्मरणीय मुलाकात से परोपकारी मम्मा के प्रति मन में आदरभाव जागृत हुआ। आज

भी मैं उस अतीन्द्रिय सुख का अनुभव भूल नहीं सकती हूँ।

आध्यात्मिक सेवा का पवित्र करार

दूसरे दिन मुम्बई के उस क्षेत्र में बहुत जोरदार वर्षा हुई। अभी मेरी बारी थी मम्मा से मिलने चलने का आग्रह करने की। मैंने बहन को घाटकोपर ले चलने के लिए आग्रह किया। वे चलने के लिए तैयार नहीं थी लेकिन मैंने उन्हें ले चलने के लिए मजबूर कर दिया। बहन ने कहा, भारी वर्षा के कारण सभी रास्तों पर पानी भर गया है, बस सर्विस और टैक्सी भी बंद हो गयी हैं इसलिए घाटकोपर जैसे दूर स्थान पर पहुँचना असम्भव है। बहन जानती थी कि मैं इतना आग्रह क्यों कर रही हूँ इसलिए अंत में उन्होंने ''हाँ'' कहा। हम दोनों रेल से घाटकोपर पहुँच गये। वहाँ भी जोरदार वर्षा थी। हम छाते के सहारे सेवाकेन्द्र पर पहुँचे। सेवाकेन्द्र स्टेशन से काफी दूर था और भारी वर्षा के कारण हम दोनों पूरे-पूरे भीग गये थे। मैं जब वहाँ पहुँची तब मम्मा अन्य बहनों के साथ फोटो निकलवाने के लिए खड़ी थी। मुझे देखते ही मम्मा ने बहुत प्यार से अपने पास बुलाया। मैंने सहर्ष आज्ञा पालन की। मेरा हाथ अपने हाथ में लेकर मम्मा ने फोटो खिंचवाया। उसी समय मैं आध्यात्मिक सेवा के पवित्र बंधन में बँध गई। मम्मा ने मधुर वाणी से कहा, ''देख संतोष, अगर तू अपना हाथ मेरे हाथ से छुड़वायेगी या दिये हुए वचन पर नहीं चलेगी तो धर्मराज तुझे भारी सज़ा देगा।'' ये बोल आज भी मेरे कानों में गूँज रहे हैं।

मम्मा से मिलकर मुझे जो आनन्द प्राप्त हुआ वह आनन्द आज भी उमंग-उत्साह दे रहा है। यह अविस्मरणीय दिव्य स्मृति क्या मैं भूल सकूँगी? नहीं। कभी नहीं!! ❖

'पत्र' संपादक के नाम

फरवरी, 2014 अंक में 'प्रेम के सागर का प्रेम' लेख पढ़ा। सच कहा है, जिसने खुद से और खुदा से प्यार करना सीख लिया उसने सब कुछ सीख लिया। 'बेहद की वैराग वृत्ति' लेख में बहुत सच्ची बात कही गई है। आदमी माया के जाल में फंस कर भला-बुरा भूल जाता है मगर इस लेख ने पुन: सच्चाई सामने ला दी।

– प्राणलाल कोटक, आकोट

मार्च, 2014 अंक में 'मन को दबाओ नहीं, समझाओ' लेख से सभी प्रश्नों के उत्तर हल हो गये। बड़े लड़के से मेरी अनबन चल रही थी। उसका समाधान बाबा ने इस लेख के माध्यम से भेज दिया। अब बाबा का शुक्रिया किन शब्दों में करूँ, वर्णन नहीं किया जा सकता।

– डा.रामनारायण बघेल,
मिश्राना-पटियाली, कासगंज

मार्च, 2014 अंक में संम्पादकीय लेख 'आपदा में आत्मनियंत्रण' जब पढ़ा तो ऐसा लगा कि सम्पादक जी मेरे घर की परिस्थितियों को देख-सुन रहे थे। आपके इस लेख से हमें शान्ति ही नहीं बल्कि शिक्षा भी मिली। कोटि-कोटि अभिनंदन।

– ब्र.कु.गंगाराम,
माधौगंज, हरदोई (उ.प्र.)

ज्ञानामृत ने मेरे हृदय में जगह बना ली है। अगली पत्रिका की आश लगाये रहता हूँ। मार्च, 2014 अंक में 'तोल-तोल कर बोल' लेख में मैं खो गया। लेख में मानव के लिए संकेत है कि उसे युक्ति-युक्त बोलना है। लेख ने व्यवहारिकता को सम्बल दिया है, साथ-साथ डगमगाये मनुष्य को जाग्रत भी किया है। मैं लेखक की भूरि-भूरि प्रशंसा करता हूँ।

– अत्तर सिंह, सूरजपुर, अलीगढ़

अप्रैल, 2014 अंक में प्रश्न-उत्तर लेख में आदरणीया दादी जानकी जी के उत्तरों ने बहुत-सी उलझनों को सुलझा दिया। 'भाग्यविधाता ने बनाया भाग्यवान' लेख द्वारा बाबा की शक्तियों के चमत्कारिक प्रभाव दिखाई दिए। 'अन्न का सदुपयोग', 'असीम बल है शुभभावनाओं में' लेख पढ़कर जीवन में कुछ करने के लिए एक शक्ति प्राप्त हुई।

– सुनील कुमार दाधीच,
बून्दी (राज.)

संजय की कलम से...पृष्ठ 4 का शेष

तो न चित्रण हो सकता है, न वर्णन। हमें न धरती भासित हो रही थी, न समय की सुध थी। चेतन सरस्वती हमारे सामने थीं। साक्षात् सरस्वती माँ को इन नैनों ने निहारा और इस मुख ने हृदय के भावों को व्यक्त किया। क्या समझ सकते हो कि माँ ने कितना प्यार किया होगा?

मैं लगभग 50 देशों में गया हूँ। रूप-लावण्य में अनेकानेक सुन्दर नारियाँ भी देखी होंगी क्योंकि आँखें बन्द करके तो यात्रा नहीं करता था। विद्वता, समाज सेवा, प्रशासन, वक्तृत्व में अग्रणी महिलाओं को भी देखा परन्तु माँ की दिव्यता, उनकी शालीनता, उनका सौन्दर्य स्वर्गिक था। उनका विवेक अद्वितीय था। वे मानवता से ऊपर उठ कर पवित्र-पुनीत हंस वर्ण की थीं। उन्हें देख कर कोई पातक हो, घातक हो या चातक, सभी कहेंगे – ''माँ''। वे पृथ्वी पर होते हुए भी पृथ्वी पर नहीं थीं। उनकी आध्यात्मिक चेतना, उनका योग-प्रकाश ऐसा था कि देखने वाला भी शरीर को भूल कर आत्मनिष्ठ हो जाता था। आत्मनिष्ठ न भी हो तो भी उसमें आध्यात्मिक चेतना जाग उठती थी। कम-से-कम थोड़े समय के लिये तो उसके तमोगुणी और रजोगुणी संस्कार बन्द हो जाते थे और उनकी जगह सतोगुण का उदय हो जाता था। ❖

ब्रह्माकुमारीज़ वार्षिक सेवा-योजना (2014-15) का विषय

परमात्म शक्ति द्वारा महापरिवर्तन का समय

● ब्रह्माकुमारी उर्मिला, संयुक्त संपादिका

सृष्टि में समय-समय पर छोटे और बड़े परिवर्तन होते आये हैं जैसे कि दिन के चार प्रहर होते हैं, बारी-बारी आते-जाते रहते हैं। ऋतुएँ भी – सर्दी, पतझड़, बसन्त, गर्मी, बरसात के क्रम से अपने-अपने समय पर अपना प्रभाव डालती हैं। मानव जीवन भी बचपन, युवा, अधेड़ और वृद्ध अवस्था पार कर पुन: बचपन अवस्था में आ जाता है। इसी प्रकार चार युग – सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुग भी बारी-बारी आते और जाते हैं। ये परिवर्तन सबको दिखाई देते हैं अथवा सब इन्हें अनुभव करते हैं परन्तु आज हम बात कर रहे हैं महापरिवर्तन की। यह महापरिवर्तन क्या है और कब होता है?

बसन्त से पहले बड़ा परिवर्तन

परिवर्तन का साधारण अर्थ है, कोई चीज़ अच्छी से और अच्छी बन जाए या बुरी से और बुरी बन जाए परन्तु महापरिवर्तन शब्द तब प्रयोग होता है जब कोई एकदम अच्छी से एकदम बुरी बन जाए या एकदम बुरी से एकदम अच्छी बन जाए। उदाहरण के लिए यूँ तो सभी ऋतुओं का अपना-अपना महत्व है परन्तु सबसे अच्छी ऋतु है बसन्त। बसन्त में फूल खिलते हैं, ना ज्यादा गर्मी, ना ज्यादा सर्दी, सुहावना वातावरण होता है परन्तु यह इतनी अच्छी बसन्त ऋतु कैसे आई? प्रकृति में आए एक बड़े परिवर्तन के बाद। बसन्त से पहले पतझड़ आई, वृक्षों के पुराने पत्ते पूरी तरह गिर गए, प्रकृति लगभग बेरंग-सी हो गई। चारों तरफ सूखे वृक्ष नज़र आने लगे। मानो प्रकृति ने किसी विशेष उद्देश्य से पुराने सभी निशान मिटा दिए हों। कुछ नया करने के लिए पुराने को मिटाना पड़ता है। प्रकृति ने भी आँधी, तूफान चलाकर पुराने को झाड़-झाड़ कर गिरा दिया, नए के लिए पृष्ठभूमि तैयार की और फिर सूखे पेड़ों पर हरी-हरी कोपलें फूट पड़ीं। देखते ही देखते हर शाखा, हरे मखमल की डाल नज़र आने लगी और चारों ओर प्राकृतिक आनन्द उमड़ पड़ा। जिस प्रकार हर वर्ष प्रकृति में यह बड़ा परिवर्तन आता है उसी प्रकार हर कल्प में सृष्टि में भी एक महापरिवर्तन आता है। वह भी सतयुग और कलियुग के बीच में (संगम पर) घटित होता है जिसके परिणाम स्वरूप ही सतयुग का आगमन होता है। वही समय अब चल रहा है।

समूल परिवर्तन नहीं होता

महापरिवर्तन और समूल परिवर्तन में अन्तर होता है। हम महापरिवर्तन की बात कर रहे हैं, समूल परिवर्तन की नहीं। जैसे प्रकृति के परिवर्तन में आँधी और तूफान द्वारा केवल पत्ते झड़े, वृक्ष तो वही रहे। इसी प्रकार कलियुग के अन्त में भी जड़-चेतन का समूल नाश नहीं होता, केवल महापरिवर्तन होता है क्योंकि पृथ्वी, सूर्य, चाँद, ग्रह, नदी, पर्वत – ये सब अनादि हैं। इनका नाश तो कभी हो ही नहीं सकता। भूगोल में इनकी आयु करोड़ों वर्षों तक भी मापी जाती है। महापरिवर्तन में इन सबका कुछ नहीं बिगड़ता। हाँ, यदि मानव ने इनमें से किसी के साथ भी कुछ छेड़-छाड़ की होगी तो उसका परिवर्तन होकर ये अपने मूल रूप में आ जाएंगे। जैसे समुद्र के किनारे बसे शहरों से समुद्र अपना क्षेत्र वापस ले लेगा। कटे हुए पहाड़ अपना मूल रूप पुन: प्राप्त करेंगे। जैसे प्रकृति विभिन्न प्राकृतिक आन्दोलनों के ज़रिए अपना मूल आदिकालीन सतयुगी रूप पुन: प्राप्त कर लेगी इसी प्रकार कलियुग में कलाहीन, शक्तिहीन, पवित्रताहीन आत्मा भी आध्यात्मिक क्रान्ति द्वारा अपना 16 कला सम्पूर्ण रूप पुन: धारण कर लेगी, इसी का नाम महापरिवर्तन है। इस महापरिवर्तन में एक परिवर्तन तो ईश्वरीय ज्ञान द्वारा

संस्कारों का होता है और दूसरा परिवर्तन सामूहिक देह परिवर्तन भी होता है।

सृष्टि-नाटक का अन्तिम छोर

यूँ तो वृक्षों के कुछ-कुछ पत्ते सारा साल टूटते-झड़ते रहते हैं परन्तु सारा वृक्ष पत्ते-विहीन केवल पतझड़ में ही होता है। सृष्टि-चक्र में भी आत्माएँ भिन्न-भिन्न समय में देह त्याग कर नया देह लेती रहती हैं परन्तु अधिकतम आत्माएँ सृष्टि-मंच को खाली कर अपने घर परमधाम वापस चली जाएँ, ऐसी महामृत्यु कलियुग के अन्त में ही आती है। अन्त के बाद आदि होती है। सृष्टि को नए सिरे से आबाद करने के लिए दैवी संस्कारों वाली आत्माओं को परमधाम से तुरन्त आकर इसे सतयुग के रूप में प्रारम्भ करना है। यह सृष्टि नाटक के अन्तिम छोर का समय है। इसी समय इस ड्रामा के मुख्य अभिनेता, निर्माता, निर्देशक परमात्मा पिता साधारण मानव तन में अवतरित हो नाटक के आदि मध्य-अन्त का ज्ञान देते हैं। मानवकृत नाटक भी इस विशाल सृष्टि-ड्रामा की नकल पर बने होते हैं। नाटकों या फिल्मों में भी हम देखते हैं कि जब नाटक अन्तिम छोर पर पहुँच जाता है तब अचानक छिपा हुआ हीरो प्रकट हो जाता है। नाटक में जो रहस्य होता है वो एकदम खुल जाता है। सृष्टि-ड्रामा के भी सभी राज़ परमात्मा पिता के प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित होने के बाद ही खुलते हैं। सन् 1937 से अर्थात् पिछले 78 वर्षों से परमात्मा शिव सृष्टि-ड्रामा का सत्य ज्ञान दे रहे हैं जिसे ब्रह्माकुमारी बहनें और भाई जन-जन तक पहुँचाने में लगे हैं।

महापरिवर्तन में ईश्वरीय शक्तियों का योगदान

गुणों और शक्तियों को देखा नहीं जा सकता। व्यवहार, कर्म, सम्बन्ध में आने पर ही महसूस किया जाता है कि अमुक में शान्ति की शक्ति है, सहनशक्ति है आदि-आदि। भगवान के गुण और शक्तियों को हम मुनष्य कैसे अनुभव करें? इसके लिए उन्हें भी धरती पर आकर अल्पकाल के लिए पराया शरीर उधार लेना पड़ता है। प्रजापिता ब्रह्मा उन्हें अपना शरीर उधार देते हैं और बदले में सतयुगी सृष्टि की बादशाही का एवज़ा पाते हैं। परमात्मा अनादिकाल से हैं और सूर्य भी अनादि काल से है। परमात्मा परम शक्ति है और सूर्य भी प्रकृति की शक्ति है। सूर्य की ऊर्जा की तरफ हमारा ध्यान अभी गया, इससे पहले हमने सौर ऊर्जा से बिजली आदि बनाने का प्रयोग क्यों नहीं किया? क्योंकि कहा गया है, आवश्यकता आविष्कार की जननी है। अब तक हमारे पास अन्य ऊर्जा संसाधन बहुतायत में थे और हम मनमाने ढंग से, लापरवाही से उनका उपभोग कर रहे थे परन्तु अब जब उनके स्रोतों (कोयला, डीजल, पेट्रोल) के समाप्त होने की स्थिति दिखने लगी तो एक तरफ हम बचत योजनाएँ चला रहे हैं और दूसरी तरफ कोई अपारम्परिक ऊर्जा स्रोत खोजने में लगे हैं। सूर्य इस प्रकार की ऊर्जा का बड़े से बड़ा स्रोत है। सौर-ऊर्जा के उपयोग पर प्रयोग करने की ओर हमारा ध्यान समयानुसार अभी गया।

शक्तियाँ प्राप्त करने की अपारम्पारिक विधि

जैसे ऊर्जा के स्थूल स्रोत घट रहे हैं उसी तरह मानव के भीतर भी सुख, शान्ति, आनंद, प्रेम, सहनशीलता ..... ये ऊर्जाएँ घट रही हैं। इनकी पूर्ति के लिए हमारा परम्परागत साधन भक्ति रहा है। भक्तिमार्ग में भी हम परमात्मा को याद करते थे, उनसे गुण और शक्तियों की भीख मांगते थे परन्तु मांगने से कुछ नहीं मिला। अत: मांगने की भेंट में कोई अपारम्परिक विधि चाहिए जो भक्ति से ज्यादा कारगर हो। उस विधि से मानव को सशक्त करने का संकल्प स्वयं परमात्मा को भी आया इसलिए कहा जाता है, परिस्थिति पुरुष को जन्म देती है। इसके लिए वे साकार तन में अवतरित हो राजयोग सिखाते हैं। जैसे सूर्य से ऊर्जा की प्राप्ति अल्पकाल के लिए तो धूप में खड़े होने से भी हो जाती है पर दिन-रात सहजता से कई रूपों में ऊर्जा मिलती रहे उसके लिए सौर-ऊर्जा तकनीक अपनानी पड़ती है।

इसी प्रकार अल्पकाल की आन्तरिक ऊर्जा मन्दिर में जाने से मिल जाती है परन्तु सदाकाल की, हर समय उपलब्ध रहने वाली आन्तरिक ऊर्जा के लिए राजयोग की तकनीक अपनानी पड़ती है।

सूर्य प्रकाश का बहुत विशाल गोला है। उसकी किरणों को हम पैराबोलिक प्लेट और रिसीवर के माध्यम से एकत्रित कर पानी को भाप में बदलते हैं। इसी प्रकार परमात्मा पिता भी सर्वशक्तिवान प्रकाशमान बिन्दु हैं। उनसे भी निरन्तर स्नेह की, शक्ति की, मोड़ने की, जोड़ने की, सहयोग की, समेटने की, विस्तार करने की, याद करने की, भूलने की, समाने की, परखने की, निर्णय लेने की, पवित्रता की आदि शक्तियाँ प्रवाहित होती रहती हैं। राजयोग के माध्यम से हम अपने आत्म स्वरूप में टिक कर इन शक्तियों को अपने में ग्रहण करते हैं फलस्वरूप इन शक्तियों में मास्टर बनते जाते हैं। जैसे मास्टर स्नेह के सागर, मास्टर शान्ति के सागर, मास्टर पवित्रता के सागर आदि-आदि।

आज चारों ओर इन ईश्वरीय शक्तियों का अकाल पड़ा हुआ है, इन्हीं की कमी के कारण घर-घर और गाँव-गाँव अपराध स्थल बना हुआ है, ऐसे में राजयोग द्वारा ईश्वरीय शक्तियों की प्राप्ति ईश्वर द्वारा दिया गया वरदान है। इन शक्तियों की धारणा से, कर्म व्यवहार में लाने से हम मनुष्य से देवता बन जाते हैं, यही महापरिवर्तन है जिसका समय अब चल रहा है। ❖

शिव ज्ञान सागर बरसा रहे हैं ज्ञानामृत

ब्रह्माकुमारी सन्तोष, तिलक नगर, नई दिल्ली

मेरा परिचय ज्ञान सागर शिव बाबा से तब हुआ जब दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में ब्रह्माकुमारीज़ का एक कार्यक्रम चल रहा था। जब वहाँ गई तो देखा, लाल प्रकाश ही प्रकाश है। प्रकाश के बीच एक नन्हा-सा डायमण्ड चमक रहा था। ध्यान उस डायमण्ड की ओर केन्द्रित था तथा मन बज रहे गीत में मग्न था। गीत था, 'एक नन्हा-सा बिन्दु, दिव्य सितारा, यह कितना है प्यारा, दिलों का सहारा'। इस दृश्य ने मुझे जादू की तरह आकर्षित किया। उस लाइट से मुझे माता-पिता की भासना आई और मेरा नया अलौकिक जन्म हो गया। इसके बाद दिल्ली, राजौरी गार्डन में क्लास करने जाने लगी।

कुछ महीने बाद दादी जी ने मुझे टीचर बहन के साथ मधुबन में बाबा से मिलने भेज दिया। मधुबन में हाल में जाकर बैठे और दादी प्रकाशमणि सभी भाई-बहनों से मिलने आ पहुँची। आते ही दादी जी ने कहा, आज जब मैं बाबा के कमरे में गई तो बाबा ने कहा, बच्ची चलना नहीं, उड़ना है। मैंने सोचा, कमाल है! यहाँ भगवान इन्हों से बातें करते हैं, फिर तो मैं अच्छी जगह आ गई हूँ। मधुबन में बाबा से मिलन मनाकर घर लौटी तो बाबा का कमरा बनाया और दोनों समय बाबा को भोग लगाने लगी। मेरे बाद मेरी बहन, उसके बच्चे भी ज्ञान में आ गए। अब हम दोनों की चार कन्याएँ बाबा के यज्ञ में समर्पित हैं। कमाल है बाबा की, कैसे हम सब का जीवन बदल दिया! जो स्वप्न में भी नहीं था वह साकार कर दिया। बचपन से ही भगवान के प्रति बहुत प्यार था। घर के सभी धार्मिक विचारों वाले थे। वे भगवान शिव को बड़ा महत्व देते थे। कहते थे, भगवान शिव पर जल चढ़ाने से वे जल्दी प्रसन्न होते हैं। उस समय यह नहीं मालूम था कि भगवान शिव ही परमपिता परमात्मा हैं। पहले हमने भगवान पर जल चढ़ाया अब प्यारे बाबा प्रतिदिन हम पर ज्ञानामृत बरसा रहे हैं। वाह हमारा भाग्य! ❖

दूसरों के दर्द मिटाने से मिट जाते हैं अपने दर्द

● सीताराम गुप्ता, दिल्ली

कविवर रहीम का एक प्रसिद्ध दोहा है :

यों 'रहीम' सुख होत है
उपकारी के संग।
बाँटनवारे को लगे
ज्यों मेंहदी को रंग।।

भाव यह है कि दूसरों की भलाई करने वाला उसी प्रकार से सुखी होता है जैसे दूसरों के हाथों पर मेंहदी लगाने वाले की उँगलियाँ ख़ुद भी मेंहदी के रंग में रंग जाती हैं। जो इत्र बेचते हैं वो ख़ुद उसकी सुगंध से महकते रहते हैं। जिस प्रकार से एक फूल बेचने वाले के कपड़ों और बदन से फूलों की सुगंध नहीं जा सकती, उसी प्रकार से दूसरों की भलाई करने वाले व्यक्ति का कभी अहित नहीं हो सकता। दूसरों की मदद अथवा परोपकार का निस्संदेह बड़ा महत्व है। प्रत्यक्ष रूप से ही नहीं, परोक्ष रूप से भी।

एक बुढ़िया थी जो बेहद कमज़ोर और बीमार थी। रहती भी अकेली ही थी। उसके कंधों में दर्द रहता था लेकिन वह स्वयं दवा लगाने में भी असमर्थ थी। दवा लगवाने के लिए कभी किसी से मिन्नतें करती तो कभी किसी से। एक दिन पास से गुज़रने वाले एक युवक से उसने कहा कि बेटा, ज़रा मेरे कंधों पर यह दवा मल दे, भगवान तेरा भला करेगा। युवक ने कहा कि अम्मा, मेरे हाथों की उँगलियों में तो ख़ुद दर्द रहता है। मैं कैसे तेरे कंधों की मालिश करूँ?

बुढ़िया ने कहा कि बेटा, दवा को मलने की ज़रूरत नहीं, बस डिबिया में से थोड़ी-सी मरहम अपनी उँगलियों से निकालकर मेरे कंधों पर फैला दे। युवक ने अनिच्छा से ऐसा कर दिया। दवा लगते ही बुढ़िया की बेचैनी कम होने लगी और वो युवक को आशीर्वाद देने लगी, बेटा, भगवान तेरी उँगलियों को भी जल्दी ठीक कर दे। बुढ़िया के आशीर्वाद पर युवक अविश्वास से हँस दिया लेकिन साथ ही उसने महसूस किया कि उसकी उँगलियों का दर्द भी ग़ायब-सा होता जा रहा है।

वास्तव में बुढ़िया को मरहम लगाने के बाद युवक की उँगलियों पर कुछ मरहम लगी रह गई थी। दूसरे हाथ की उँगलियों से उसे पोंछने की कोशिश की तो मरहम उसके दूसरे हाथ की उँगलियों पर भी लग गई। यह उस मरहम का ही कमाल था जिससे युवक के दोनों हाथों की उँगलियों का दर्द ग़ायब-सा होता जा रहा था। अब तो युवक सुबह, दोपहर और शाम तीनों वक़्त बूढ़ी अम्मा के कंधों पर मरहम लगाता। कुछ ही दिनों में बुढ़िया पूरी तरह से ठीक हो गई और साथ ही युवक के दोनों हाथों की उँगलियाँ भी दर्दमुक्त होकर ठीक से काम करने लगीं। तभी तो कहा गया है कि जो दूसरों के ज़ख़्मों पर मरहम लगाता है उसके ख़ुद के ज़ख़्मों को भरने में देर नहीं लगती।

'दूसरों के ज़ख़्मों पर मरहम लगाना' अब इस मुहावरे को भी देख लीजिए। इसका अर्थ है, किसी को सांत्वना देना, पीड़ा को कम करना। ज़रूरी नहीं, इसके लिए कोई दवा या मरहम ही लगाई जाए क्योंकि यह पीड़ा भौतिक ही नहीं, मानसिक भी हो सकती है। यदि कोई किसी को, किसी भी प्रकार की पीड़ा से मुक्त करता है तो मुक्त होने वाला, कष्ट समाप्त करने वाले के प्रति कृतज्ञता से भर उठता है और आशीर्वाद या दुआएँ देने लगता है। यह देखकर कष्ट हरने वाला व्यक्ति एकदम विनम्र होकर परमार्थ के भावों से भर उठता है। उसका मन करता है कि मैं सदैव लोगों के कष्ट दूर करने में लगा रहूँ और दुनिया के सभी लोग कष्टमुक्त हो जाएँ। ऐसी भावावस्था में व्यक्ति के शरीर में स्थित अंत:स्रावी ग्रंथियों से लाभदायक हार्मोंस का उत्सर्जन प्रारंभ हो जाता है जो उसे रोगमुक्त करने में सहायक होते हैं।

निष्काम भाव से कोई समाजोपयोगी कार्य करने से व्यक्ति की प्रतिष्ठा बढ़ती है, प्रशंसा भी होती है जिससे व्यक्ति को असीम परितुष्टि का अहसास होता है। यह अहसास व्यक्ति के शरीर में सेरोटोनिन हार्मोन के स्तर को बढ़ा देता है जो उसके स्वास्थ्य और रोग-मुक्ति के लिए बेहद उपयोगी होता है। दूसरों की मदद करके भी हम अपने लिए रोग-मुक्ति, अच्छा स्वास्थ्य और दीर्घायु सुनिश्चित कर सकते हैं, इसमें संदेह नहीं। ❖

आँखों में पानी – तब और अब

ब्रह्माकुमारी रीता वालिया, पठानकोट

बाबा, मीठे बाबा, आपका मिलना एक सपना-सा लगता है। कभी न सोचा था कि आप यूँ ही मुझे मिल जाओगे। बाबा, किन शब्दों में आपका धन्यवाद करूँ, वो शब्द जुटा नहीं पा रही हूँ। जब लौकिक बाप का साथ छूटा तो सारी दुनिया अन्धेरी हो गई। सब अपने भी बेगाने हो गए। साल भर में ही घर-बार छूट गया। इतनी बड़ी दुनिया में अपने को अकेले पाया। सब उम्मीदें खत्म हो गईं और भक्ति भी छूट गयी। हर पल यही सोचकर चलती थी कि कौन-सा दिन अन्तिम दिन होगा। यूँ ही दिन बीतते चले गए।

एक दिन बहुत ज्यादा परेशान थी, तो अपने मन को शान्त करने के लिए बौद्धि मेडिटेशन विधि (विपशना) के लिए चली गई और 11 दिन वहीं पर रही। उन 11 दिनों में एक भी शब्द बोलने की इज़ाजत नहीं थी, 12वें दिन वापिस आई तो स्थिति में कोई बदलाव नहीं था।

इसके बाद मुझे पता चला कि ब्रह्माकुमारीज़ में भी मेडिटेशन सिखाते हैं, तो वहाँ भी चली गई। वहाँ जिन्दगी को नया रूप मिल गया। उस दिन लगा, मेरा नया जन्म हुआ है। तब से आज तक बाबा, ऐसा नहीं कि परिस्थितियाँ नहीं आईं पर उन्हें हँस कर झेलना सीख लिया। हर विकार को आपको सौंपना सीख लिया। आपने तो बाबा मेरा जीवन ही बदल दिया। आपने मुझे हर पल मुसकराना सिखा दिया। बाबा, आँखों में पानी तब भी था और आँखों में पानी अब भी है। पहले दुख को बर्दाश्त न करने के कारण रोती थी पर अब आपके प्यार में आँखें छलक जाती हैं। आज इस ड्रामा का राज़ समझ में आया। आपने तो मेरे हर आँसू का मोल चुका दिया। आपके रूहानी प्यार ने मेरे जख्मों को सहला दिया। बाबा, अब तो आँखें बन्द करूँ या खोलूँ, आप ही नज़र आते हैं।

सुबह आप बड़े प्यार से जगाते हैं, सारा दिन हाथ पकड़ कर चलाते हैं और मुरली में हर रोज़ सिखाते हैं कि 'बच्चे हर पल मुझे याद करो, मैं हर पल साथ हूँ।' कहाँ वो दिन थे जब रातें जाग-जाग कर या रो-रो कर काटती थी, नींद लाने के लिए दवाई खानी पड़ती थी। फिर भी नींद कुछ समय बाद टूट जाती थी। पर अब आपकी मीठी याद में, आपकी गोद में कब नींद आ जाती है, पता ही नहीं चलता। सुबह आपकी प्यारी-सी आवाज़ मुझे जगाती है। बाबा आपने मुझे फर्श से अर्श पर बिठा दिया। हज़ारों धन्यवाद हैं बाबा। एक जन्म तो कुछ भी नहीं आपका धन्यवाद करने के लिए, आपने तो मुझे हर जन्म का ऋणी बना दिया। ❖

भक्ति से ज्ञान तक का सफर

● ब्रह्माकुमारी विजया, वरणगाव (महाराष्ट्र)

धार्मिक पृष्ठभूमि वाले परिवार में जन्म होने के कारण बाल्यकाल से ही मैं भक्ति की ओर उन्मुख हुई। धार्मिक-आध्यात्मिक पुस्तकों का खूब अध्ययन किया और भगवान को पाने की तड़प में मास-मास भर के उपवास किए परन्तु न भगवान मिले, न मन को शान्ति मिली। इसके बाद गीता का अध्ययन किया पर मन में प्रश्न उठता था कि भगवान ने एक अर्जुन को ही गीता क्यों सुनाई, हमें क्यों नहीं सुनाई? फिर भक्ति से वैराग्य आने लगा और मैं सद्गति के लिए गुरु खोजने लगी पर मन के अनुकूल किसी गुरु से भी मिलन नहीं हुआ। फिर मैंने सोच लिया कि शायद ईश्वर और गुरु दोनों ही मेरे नसीब में नहीं हैं और बहुत उदास रहने लगी।

गीता का सही अर्थ समझ में आने लगा

एक सत्गुरुवार के दिन पड़ोस में रहने वाली एक बहन निमंत्रण देने आयी कि सामने ही ब्रह्माकुमारीज़ सेंटर है, आज आप प्रसाद लेने के लिए वहाँ आइये। मैं शाम के समय वहाँ गयी। ब्रह्माकुमारी बहन ने ज्ञान की कुछ बातें सुनाईं, प्रसाद दिया और कहा, यहाँ गीता का ज्ञान सुनाया जाता है। मैंने पूछा, क्या गीता अर्थ सहित समझाएंगे? वे बोली, सरल भाषा में अर्थ सहित समझाएंगे और वह भी नि:शुल्क। यह सुनकर बहुत खुशी हुई। अगले दिन से सेंटर पर जाने लगी। पहले दिन आत्मा का पाठ, दूसरे दिन परमात्मा का पाठ मिला। जैसे-जैसे वे समझाते गए, हर बात मेरे सामने स्पष्ट होती गई। बहुत सरल भाषा में बहन जी ने समझाया। मैं घर जाकर गीता खोलकर पढ़ती तो पाती कि वही ज्ञान है। आज तक इतनी बार गीता पढ़ी लेकिन कुछ समझ में नहीं आया। अभी दीदी ने समझाया तो आत्मा क्या है, परमात्मा क्या है, स्पष्ट अनुभव होने लगा। मैंने युगल को यह बात बताई तो कहने लगे, मैं भी कल से चलूँगा। ज्ञान इतना अच्छा लगा कि हम साप्ताहिक कोर्स के दौरान ही पूरे नियम-धारणाओं पर चलने लगे।

बाबा की प्रखर किरणें मुझ आत्मा में समाने लगीं

दो दिन मुरली सुनने के बाद मेरे मन में संशय आया कि ये तो मुरली में 'बाबा ने कहा, बाबा ने कहा', ऐसे ही कहते हैं। शाम को जब युगल ने

कहा, चलो मुरली सुनने तो मैंने कहा, मैं नहीं जाऊँगी, वे तो अपने बाबा की महिमा सुनाते हैं। वे बोले, आपको नहीं आना तो नहीं आओ, मैं तो मुरली सुनने जा रहा हूँ। वे चले गये। उसके बाद मुझे अंदर से खींच होने लगी और मैं भी सेंटर पर चली गई। मुरली सुनी। मुरली तथा योग के बाद एक माताजी ने कहा, यहाँ हरेक को अनुभव होता है, हम यहाँ डायरेक्ट भगवान के महावाक्य सुनते हैं। इस वाक्य से मेरी आशा जग गयी। दूसरे दिन मुरली सुनने के लिये सेंटर गई और योग में बैठ गई। मैंने बाबा को बोला, हे भगवान, अगर आप ही सत्य भगवान हैं तो मुझे भी अपना अनुभव कराइये, फिर मैं आपका हाथ और साथ कभी नहीं

छोडूंगी, पूरा जीवन आप पर स्वाहा करूँगी। इसके बाद मेरी बुद्धि की रस्सी बाबा ने खींच ली, मुझमें रूहानी शक्ति का प्रवाह आने लगा और मैं अशरीरी हो गई। शरीर से अलग होकर ऊपर से अपने शरीर को देखने लगी। योग में बैठे भाई-बहनों को भी देखने लगी। उस समय मुझे बहुत हलकापन महसूस हो रहा था, खुशी हो रही थी। थोड़े समय बाद बाबा ने मुझे अपने पास परमधाम में खींच लिया। वहाँ लाल-सुनहरे रंग का प्रकाश चारों ओर फैला हुआ था। बाबा की शक्तियों के प्रकंपन चारों ओर फैल रहे थे और मैं बाबा के सम्मुख थी। बाबा ने अपने तेजस्वी बिन्दुरूप का अनुभव कराया। बाबा के प्रकाश की प्रखर किरणें मुझ आत्मा में समा रही थी। उस समय मेरी खुशी का तो कोई ठिकाना ही नहीं था। सुख, शान्ति, पवित्रता का अनुभव हो रहा था। खुशी में मन अंदर नाचने लगा था। मैंने बाबा को कहा, बाबा, मैं इतने दिनों से इसी सुख की प्यासी थी, यही मेरे मन की चाहना थी, इसके लिए ही मैं तड़प रही थी, मुझे जो चाहिये था अब मिल गया। ऐसे कहकर मैं बाबा के प्यार में समा गयी। जिसे अतीन्द्रिय सुख कहा जाता है, यह वही था। मैं शब्दों में उसका वर्णन नहीं कर सकती।

शान्ति और प्रेम का अनोखा अनुभव

निमित्त बहन ने बताया था कि बाबा शान्ति के सागर हैं, मैं शांत स्वरूप आत्मा हूँ, बाबा प्रेम के सागर हैं, मैं प्रेम स्वरूप आत्मा हूँ – इस प्रकार चिंतन करते रहना है। मैं वही चिंतन करने लगी। इससे बाबा की शान्ति की लाइट की किरणें मुझ आत्मा में समाने लगी। शान्ति का वह अनुभव बहुत अलग था जो कभी इस दुनिया में नहीं किया था। गहन शान्ति थी। फिर मैंने संकल्प किया, बाबा प्रेम के सागर हैं, मैं प्रेम स्वरूप आत्मा हूँ, तो प्रेम का इतना गहरा अनुभव हुआ कि साकार में वह अनुभव कभी नहीं हो सकता। इसी तरह मैं बाबा के एक-एक गुण का, शक्तियों का अनुभव करती गयी और बाबा मुझे उसका गहराई से अनुभव कराते रहे। मैं बाबा के प्यार में समा गयी। बहुत समय तक मैं इसी अनुभव में समाई रही। फिर मैं नीचे शरीर में आने लगी। मैंने क्लास में क्या देखा, जो बहन योग करा रही थी, बाबा से शक्तियों की लाइट-माइट की किरणें फाऊंटेन की तरह उनकी आत्मा में समा रही थीं और उनके मस्तक से और आँखों से निकल कर सभी क्लास में बैठने वालों की आत्मा में समा रही थीं। बहन जी की आत्मा मुझे स्पष्ट अनुभव हो रही थी और सभी क्लास वालों की भी आत्मा स्पष्ट अनुभव हो रही थी।

अर्जुन बनकर सुनी ज्ञान-मुरली

फिर योग समाप्त हुआ, सफेद लाइट हुई, तभी मैंने शरीर में प्रवेश किया। मैंने बाबा को दिल से बार-बार शुक्रिया अदा किया और कहा, बाबा, अब मैंने आपको पूरा ही पहचान लिया। उसके बाद पूरा परिवार ही ज्ञान में चलने लगा और एक साल के बाद मधुबन बाबा के घर मिलने मनाने पहुँचे। जिनके लिए मैं इतने दिनों से तड़प रही थी वे मुझे अब सम्मुख मिलेंगे, इसकी बहुत ही खुशी थी। जब बाबा आये तो मैं तो प्यार में समा गई। जब बाबा मुरली सुनाने लगे तो मुझे अनुभव हुआ कि जैसे यादगार है कि श्रीकृष्ण ने अर्जुन को गीता सुनाई, ऐसे ही बाबा मुझ आत्मा को (अर्जुन को) यह ज्ञान की गीता सुना रहे हैं। मैं तो धन्य-धन्य हो गई।

अब तो हमारा पूरा परिवार बाबा का बन गया है। दो बेटियाँ सेंटर पर समर्पित हैं। एक बेटा मधुबन में समर्पित है और हम दोनों भी बाबा की सेवा में रहते हैं। बाबा हर पल, हर घड़ी साथ दे रहे हैं। गुरुओं के भी गुरु सद्गुरु शिवबाबा मिल गये इसलिए अंदर यही गीत गूंजता है – धन्य-धन्य हो गये, हम प्रभु को भा गये। ❖

सदा शक्तिशाली कैसे बनें ?

● ब्रह्माकुमार सुरेश कुशवाहा, भिलाई

आज सारा विश्व तेजी से तनाव, भय व चिंता की ओर बढ़ता जा रहा है जबकि दूसरी तरफ विभिन्न सुख-सुविधाओं के साधन भी बढ़ते जा रहे हैं। कइयों ने तो तनाव भरे जीवन को ही स्वाभाविक समझकर स्वीकार कर लिया है। लेकिन यदि हम कुछ सकारात्मक प्रयास कर स्वयं को शक्तिशाली बनाकर जीवनयात्रा में आगे बढ़ें तो निश्चिंतता का सुखद अनुभव होता जायेगा और हम सफलता की ओर तेज़ी से अग्रसर होंगे। सदा शक्तिशाली रहने के लिए कुछ सहज युक्तियाँ प्रस्तुत हैं –

सच्चाई व सफाई

सत्य में बहुत बल होता है, झूठ से भय होता है। सर्वप्रथम हमें स्वयं से सच्चा रहना है। फिर परमात्मा पिता व संबंधियों से सच्चा रहना है। जो सोचें वही बोलें व कर्म में लायें। सत्यता जीवन में निर्भयता लाती है। कहा भी जाता है – सच तो बिठो नच। सच्चाई वाला खुशी में नाचता रहेगा लेकिन सत्य बात को भी बड़ी सभ्यता व विनम्रता से पेश करना चाहिए। सफाई माना मन व शरीर दोनों को शुद्ध व पवित्र बनाते चलें।

बुद्धि में लक्ष्य की स्पष्टता

जब हम एक महान् लक्ष्य लेकर दृढ़ता से सर्व बाधाओं को पार करते हुए उस पर आगे बढ़ते जाते हैं तो हम शक्तिशाली बनते जाते हैं। विश्व में जितने भी महान लोग हुए हैं जैसे महात्मा गाँधी, विवेकानंद, दयानंद, ब्रह्माबाबा, महर्षि अरविन्द, मदर टेरेसा इत्यादि इनके भीतर सदा मानवता के कल्याण का महान लक्ष्य रहा है। जब हम सत्य मार्ग पर चलकर विभिन्न समस्याओं का वीरता से सामना करते हैं तो हमारी आंतरिक शक्तियाँ तेज़ी से बढ़ती हैं व परमात्मा के साथ का अनुभव भी होता है। लक्ष्य की स्पष्टता से उसे प्राप्त करना सहज होता है। हम ऐसे बनें जो अनकों को प्रेरणा मिले। हमारे जाने के बाद भी लोग हमें याद करें।

ईश्वरीय शक्तियाँ प्राप्त करने की विधि का ज्ञान

सर्वशक्तियों के सागर सर्वशक्तिवान परमपिता परमात्मा हैं। उनसे संबंध जोड़कर कहीं भी रहते उनकी शक्तियों या सहयोग का अनुभव कर सकते हैं। लेकिन इसके लिए स्वयं के सत्यस्वरूप यानि आत्मस्वरूप का, परमात्मा के स्वरूप व निवासस्थान का ज्ञान आवश्यक है जो प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में नि:शुल्क दिया जाता है। यह ज्ञान स्वयं परमात्मा पिता द्वारा प्रदत्त है जो सर्व प्राप्तियाँ कराने वाले हैं। आत्मा के परमात्मा से संबंध जोड़ने की विधि को ही राजयोग (मेडीटेशन) कहा जाता है। आत्म व परमात्म निश्चय के आधार पर हम निर्भय व निश्चिंत जीवन सहज बिता सकते हैं क्योंकि इससे हमारा स्वमान जागृत हो जाता है कि हम उनके बच्चे, उनके जैसे हैं, कमज़ोर नहीं हैं।

सर्व के प्रति शुभ-भावना व क्षमा-भावना

दुनिया की सभी आत्मायें परमपिता परमात्मा की संतान होने के कारण आपस में भाई-भाई हैं, तो अपने आत्मा रूपी भाइयों पर हमें सदा शुभभावना व क्षमाभावना रखनी है, भले ही पुराने संस्कार-वश या हिसाब-किताब के कारण वे हमसे कुछ गलत व्यवहार कर दें। क्षमा करने वाला ही शक्तिशाली होता है। गलतियाँ करने वाला तो गलतियों के वशीभूत कमज़ोर होता है। हमें सहनशील बन सर्व को आगे बढ़ाने का प्रयास करना है। ऐसा करने से सर्व की दुआयें प्राप्त होंगी व हम शक्तिशाली बनते जायेंगे। शुभभावना व क्षमा भावना रखने के लिए सदा शुभचिंतन व परमात्म चिंतन में रहने का पुरुषार्थ करना है। परमात्मा के समान स्वयं को मास्टर सर्वशक्तिवान, पूर्वज या पालनहार समझने से शक्तियों का

स्वत: अनुभव होता है।

कर्मठता के साथ कर्मयोगी

चाहे हम विद्यार्थी हों, गृहस्थी हों, व्यापारी, इंजीनियर, डॉक्टर या कोई भी कार्य करने वाले हों, अपने कर्म को पूरी लगन व ईमानदारी से पूर्ण करें। कर्म में आनंद लेने की विधि सीखें, कर्म बोझ न लगे। अपने कार्यों से दूसरों को संतुष्ट करने का लक्ष्य रखें। ऐसा कर्मठ जीवन बिताने के लिए कर्मयोगी यानि कर्म करते हुए परमात्मा की याद में रहने का अभ्यास करते रहें। स्वयं को मिले हुए कार्यों को समय से पूर्व समाप्त कर दूसरों को भी सहयोग कर उनकी दुआयें लें। दुआयें हमें हलका व शक्तिशाली बनाती हैं। कार्यस्थल या सेवास्थान पर हलका व शांत माहौल बनाकर रखने का प्रयास करें। दुनिया के सारे महान लोग मेहनत करके ही आगे बढ़े हैं। मेहनत का कोई विकल्प नहीं है। मेहनत करने से फायदे ही फायदे हैं, घाटा कुछ नहीं। जो स्वयं को अच्छे कार्यों में व्यस्त नहीं रखते वे ही व्यर्थ बातों में आकर अपनी शक्तियाँ नष्ट कर कमज़ोर बनते जाते हैं। व्यर्थ से सदा बचे रहें व भगवान के बच्चे बने रहें तो सफलता निश्चित है। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के संस्थापक प्रजापिता ब्रह्माबाबा ने 93 वर्ष की उम्र तक अथक होकर 18 से 20 घंटे प्रतिदिन कर्मयोगी हो कर्म किया। संस्था की प्रथम मुख्य प्रशासिका मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती ने भी जागती ज्योत बन ईश्वरीय सेवाओं में दिन-रात एक कर बहुत ही कम उम्र (46 वर्ष) में संपूर्ण स्थिति को प्राप्त किया। हमारी दादियाँ, वरिष्ठ दीदियाँ भी उन्हीं के ही कदम पर कदम रखकर चल रही हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि शक्तिशाली, निश्चिंत, सफल व प्रेरणादायी जीवन बनाने के लिए उपरोक्त पाँच बातें जीवन में धारण करना अत्यंत आवश्यक है। राजयोग की विधि व ईश्वरीय ज्ञान से ये सभी बातें सहज ही जीवन में आने लगती हैं इसलिए परमात्म संग द्वारा शक्तिशाली बन महान कर्त्तव्यों में सहयोगी बनने के इच्छुक लोगों को एक बार अवश्य ही प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के नज़दीकी सेवाकेन्द्र पर जाकर नि:शुल्क राजयोग मेडिटेशन सीखना चाहिए। ❖

मीठी मम्मा

ब्रह्माकुमार नितिन, विरार (मुंबई)

ज्ञान का आँचल देकर बचाया माया के वार से।
विराने में फूल खिला दिये मम्मा, तूने प्यार से।।

आगे रही आप हमेशा सेवा के मैदान में,
मुख में ज्ञान रहा सदा, ज्यों तीर हो कमान में,

अविचलित रही स्वस्थिति, परिस्थितियों के तूफान में,
अटूट-अखंड निश्चय रहा, निराकार शिव भगवान में,

दुर्गा बनकर दुर्गुण मिटाये ज्ञान की तलवार से।
विराने में फूल खिला दिये, मम्मा तूने प्यार से।।

नाम आपका सबसे आगे, धरती के सितारों में,
तुझसा नहीं है कोई मम्मा, लाखों-करोड़ों-हजारों में,

नज़र आती है तेरी सूरत, मधुबन के मधुर नज़ारों में,
खिलती हुई कलियों में और लहराती हुई बहारों में,

संतोषी बन सन्तुष्ट किया सबको सद्व्यवहार से।
विराने में फूल खिला दिये, मम्मा तूने प्यार से।।

आप रहे उपराम चित्त, साधना को ऊंचा रखा साधन से,
रूहों ने पाई राहत, ज्ञान-वीणा के सुरीले वादन से,

स्नेह-करुणा-उपकार भाव जगाया तूने जन-जन में,
उमंग-उत्साह-विश्वास बढ़ाया आपने हर एक मन में,

ज्ञान-धन लुटाया लक्ष्मी बनकर, न हटे कभी परोपकार से।
विराने में फूल खिला दिये, मम्मा तूने प्यार से.....

जीवन हो तो ऐसा

● ब्रह्माकुमार मुरली, बैरागढ़ (भोपाल)

मैं ने पान की छोटी दुकान मात्र 15 साल की उम्र में खोली। इस कारण गुटखा, बीड़ी, तम्बाकू खाने वालों का संग मिला जिससे मैं भी इन चीजों का आदी होता गया। आर्थिक समस्या और बुरे संग के कारण पढ़ाई ज्यादा नहीं की। बढ़ती उम्र के साथ बुरी आदतें बढ़ती गई। दोस्तों के साथ हर शनिवार घूमने जाना, होटल में तामसिक खाना, पीना और रात को दो बजे घर जाना, ये सब आम बातें बन गईं।

कमाने के चक्कर में डूब गया कर्ज में

घर वाले मुझसे डरने लगे थे और साथ-साथ बहुत परेशान भी रहने लगे थे। लड़ाई-झगड़ा करना मेरा स्वभाव बन गया था। खाने में कोई चीज़ अच्छी नहीं लगती थी तो थाली उठाकर दीवार पर फेंक देता था। नशे में जब घर जाता था तो जूते-चप्पल सहित सो जाता था। सुबह एक जूता कहां, तो दूसरा जूता कहां मिलता था। कुसंग का कुरंग और ही दबंग बनाता गया। पैसे जल्दी कमाने के चक्कर में जुआ खेलने लगा, सटोरियों के साथ उठना-बैठना हो गया। फिर हर वक्त पुलिस का भय सताने लगा और ज्यादा कमाने के चक्कर में कब कर्ज में डूब गया, पता ही नहीं चला।

दोस्त ने दुकान पर कोर्स कराया

खराब खान-पान के कारण मेरी दृष्टि-वृत्ति तमोप्रधान हो गई। मन अशांत रहने लगा। सारा दिन मन में व्यर्थ संकल्पों का तूफान मचा रहता। मानसिक तनाव रहने लगा। इन सबसे छूटना तो चाहता था परंतु रास्ता पता नहीं चल रहा था। फिर आत्महत्या का विचार भी कई बार आने लगा। उन्हीं दिनों मेरा एक पुराना मित्र, जो कभी बुरी आदतों में मेरा साथी था और कुछ समय से ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र जाने लगा था, आकर मुझे आश्रम चलने के लिए प्रेरित करने लगा परन्तु किसी न किसी बात का कारण बताकर मैं उसे टरका देता था। उस भाई ने जब देखा कि यह आश्रम नहीं चल रहा है तो दुकान पर ही आकर कोर्स कराना शुरू किया।

जीवन हो तो ऐसा

कोर्स करने पर चिड़चिड़े मन को जैसे कि रास्ता मिल गया। धीरे-धीरे क्लास में जाने लगा, मुरली सुनने लगा और मुरली सुनते-सुनते कब मुरलीधर से प्यार हो गया, पता ही नहीं पड़ा। शान्ति मिलने लगी, जीवन बदल गया, दृष्टि, वृत्ति पवित्र हो गई, खानपान सतोप्रधान हो गया और जीवन का यह लक्ष्य बना लिया कि मुझे भी मास्टर मुरलीधर बनकर बाबा का नाम रोशन करना है।

जानवर जैसे को बनाया मन्दिर लायक

परिस्थितियाँ अब भी आती हैं पर हिलाती नहीं हैं। बात चाहे छोटी हो या बड़ी, मुख से निकलता है, जाने दो, इस प्रकार सेकण्ड में फुलस्टॉप लग जाता है, मेहनत नहीं करनी पड़ती। अब मुझे किसी की भी बात बुरी नहीं लगती। कोई गाली भी देता है तो मुसकराता रहता हूँ। ऐसा परिवर्तन देखकर घरवाले, पड़ोसी अचरज खाते हैं कि इसे किसका जादू लग गया। मैं भी कहता हूँ, हाँ, मुझे शिव बाबा ने जादू लगाया है। मैं चाहता हूँ, ऐसा जादू हर व्यक्ति को लगे तो कितना अच्छा हो। शुक्रिया है बाबा का जिसने एक जानवर जैसे व्यक्ति को मंदिर के लायक बना दिया।

बदल जायेंगी रेखाएँ और दशाएँ

अब बाबा के घर की हर प्रकार की सेवा जी जान से करता हूँ। हाथों की लकीरें, दशायें सब बदल गई हैं। आश्रम की आदरणीया बहनों ने भी पालना देकर मुझे बहुत आगे बढ़ाया है। अब यह जीवन शिवबाबा की दी हुई अमानत है। इसे तन, मन, धन सहित सफल करना है। मेरा सब पाठकों से अनुरोध है कि एक बार अपने नज़दीक के ब्रह्माकुमारी आश्रम पर जाकर सात दिन का कोर्स अवश्य करें। मुझे पूरा विश्वास है कि आपके जीवन की रेखायें और दशायें भी बदल जायेंगी और आप भी गर्व के साथ कहेंगे कि जीवन हो तो ऐसा। शुक्रिया बाबा शुक्रिया। ❖

बाबा ने बनाया डबल डॉक्टर

● ब्रह्माकुमारी डॉ.लता, धार (म.प्र.)

स्त्री रोग विशेषज्ञ के रूप में वर्तमान समय मैं निजी नर्सिंग होम (चौहान हॉस्पिटल, 35 Beded) में अपने सर्जन पति डॉ. कमल सिंह चौहान के साथ सेवारत हूँ। दोनों पुत्र रत्न भी डॉक्टर हैं। जिन्दगी में कई चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना किया है परन्तु प्रैक्टिस शुरू करने के बाद मुझे अक्सर तीन-चार दिन में भयंकर माइग्रेन (सिरदर्द) होता था और उल्टियां भी होती थीं। मुझे उस दौरान यदि कोई ऑपरेशन करना होता था तो 10-15 मिनट पहले इन्जेक्शन स्टेमेटिल या वोवेरॉन लगवाना पड़ता था। जीवन में सब कुछ (नाम, मान, शान, पैसा) प्राप्त होने के बावजूद मुझे महसूस होता था कि मेरा जीवन डॉक्टरी पेशे के अलावा अन्य किसी कार्य के लिये है। कई बार इच्छा होती थी कि सबकुछ छोड़कर शान्ति की तलाश में हिमालय पर चली जाऊँ।

यहाँ इतना अच्छा क्यों लग रहा है?

सन् 1998 में ब्रह्माकुमारी आश्रम के भाई-बहनें माउन्ट आबू में आयोजित डॉक्टरों के शिविर का निमंत्रण देने आये थे। विषय था 'डॉक्टरी पेशे में तनाव मुक्त कैसे रहें?' मुझे बहुत अच्छा लगा, तुरन्त तैयार हो गये। अन्य डॉक्टर युगल को भी साथ ले गये। ज्ञान सरोवर पहुँचते ही हमें दिव्य अनुभूति हुई। सुबह राजयोग की पहली क्लास में सम्मिलित हुए। आत्मा के बारे में बहुत विस्तृत ज्ञान मिला। हम सोचने लगे, डॉक्टर तो बन गये हैं परन्तु अपने आप को नहीं पहचाना कि हम कौन हैं, कहाँ से आये हैं, जीवन का उद्देश्य क्या है। शाम को वरिष्ठ डॉक्टर ब्रह्माकुमार प्रेम मसन्द भाई से वार्तालाप हुआ तो पूछा, यहाँ इतना अच्छा क्यों लग रहा है, सबके चेहरे हर्षित हैं, हर कोई, हर एक की मदद करना चाहता है, सब ईमानदारी से अपना कार्य कर रहे हैं, कोई निर्देश देने वाला नहीं और असीम शान्ति की अनुभूति हो रही है। तब उन्होंने बताया कि यह कोई साधारण संस्था नहीं है, स्वयं परमात्मा ने आकर इसे स्थापित किया है, यहाँ विश्व परिवर्तन का कार्य चल रहा है। जिन्होंने साधारण रूप में अवतरित परमपिता परमात्मा को पहचाना वे इस यज्ञ में समर्पित होकर समर्पण भाव से ईश्वरीय कार्य कर रहे हैं।

दूर हो गये तनाव और माइग्रेन

यहाँ आकर हमें जीवन का नया उद्देश्य मिला कि हमें डबल डॉक्टर बनकर ईश्वरीय कार्य में मददगार बनना है। भगवान इतनी दूर से आये हैं, हम कम से कम उनके मददगार तो बन सकते हैं ना। स्व परिवर्तन से ही विश्व परिवर्तन हो सकता है। अब हम ट्रस्टी हो गये हैं, हॉस्पिटल को रूहानी हॉस्पिटल बना दिया है जहाँ से निरन्तर परमात्मा का संदेश दिया जा रहा है। अब हम नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविर आयोजित करते हैं तथा स्कूलों में नैतिक मूल्यों की शिक्षा देते हैं। राजयोग के अभ्यास तथा ईश्वरीय सेवा से तनाव, माईग्रेन अपने आप दूर हो गए हैं। समय प्रति समय हमारी कार्य प्रणाली में आने वाली परेशानी को हल करने में ईश्वरीय ज्ञान की मुरली सहायक होती है। मुरली से हमने सीखा कि व्यक्ति अगर गलत कार्य कर रहा है तो उसके प्रति शुभभावना, शुभकामना रखकर उसे सही शिक्षा दी जा सकती है। यदि उसे जताया गया कि आप गलत हैं तो वह भी हमारे मार्ग पर रोड़े अटकाएगा और सिद्ध करने की कोशिश करेगा कि आप उससे भी ज्यादा गलत हैं। अत: अपने शुद्धिकरण द्वारा दूसरों के शुद्धिकरण का मार्ग बाबा ने दिखाया है। ❖

आबू में रक्त संचय व संरक्षण केन्द्र (ब्लड बैंक)

● ब्रह्माकुमार रामलखन, शान्तिवन (आबू रोड)

हरेक मनुष्य में पाँच से छः लीटर ही खून पाया जाता है। चौबीस घन्टे में इसका हमारी नस-नाड़ियों में निरन्तर प्रवाह करीब 1200 कि.मी.की लम्बाई जितना हो जाता है। दुर्घटनाओं, शल्य क्रियाओं, जलने, प्रसूति व असाध्य बीमारियों से ग्रसित रोगियों को तथा एनिमिया, ल्यूकेमिया (रक्त कैंसर) जैसे कई रोगों में खून की आवश्यकता पड़ती ही है। सुरक्षित खून की सारे संसार में आवश्यकता है परन्तु सुरक्षित रक्त की 30 प्रतिशत से अधिक व्यवस्था नहीं हो पा रही है। सुरक्षित रक्तदाता अपनी बीमारियों और कमजोरियों को भी स्पष्ट बता देते हैं जिससे लेने वाले मरीजों को घातक नुकसान उठाना नहीं पड़ता है। ग्लोबल हास्पिटल, माउन्ट आबू और ट्रोमा सेंटर, आबू रोड के ब्लड बैंक में प्रायः सुरक्षित और सात्विक रक्त संचित किया जाता है। यहाँ अधिकतर राजयोगी, ब्रह्मचारी, ज्ञानी-योगी लोग विश्व कल्याण अर्थ स्वेच्छा से रक्तदान करके आध्यात्मिक सेवा में महायोगदान करते रहते हैं।

ग्लोबल हॉस्पिटल के मैनेजिंग ट्रस्टी भ्राता निर्वैर जी, संचालक डॉ.प्रताप भाई और डॉ.सतीश गुप्ता जी ने ब्रह्माकुमारीज़ के वरिष्ठ भाई-बहनों व बापदादा से राय लेकर यहाँ सर्व सुविधा सम्पन्न ब्लड बैंक की व्यवस्था बनायी है। अब तो ट्रोमा सेन्टर में 1000 यूनिट से भी अधिक ब्लड संचय करके विधिवत् संरक्षित करने की सुविधायें हैं। रक्त के अवयवों को भी अलग-अलग करके रखने व देने की उत्तमतर व्यवस्थायें हैं। करीब 200 कि.मी.के दायरे में पहले यहाँ एक भी ऐसा ब्लड बैंक नहीं था। करीब 50 क्षेत्रीय अस्पतालों व नर्सिंग केन्द्रों को भी यहीं से मदद मिलती है। चौदह जून और 1 अक्टूबर को ''रक्तदाता दिवस'' के रूप में हर साल मना कर विशिष्ट रक्तदाताओं को सम्मानित भी किया जाता है।

ग्लोबल हॉस्पिटल, माउन्ट आबू का ब्लड बैंक लायन्स क्लब के द्वारा और ट्रोमा सेन्टर, आबू रोड का ब्लड बैंक रोटरी क्लब, आबू रोड तथा रोटरी इन्टरनेशनल द्वारा संरक्षण प्राप्त है। दोनों ही ब्लड बैंक आधुनिकतम उपकरणों द्वारा सुसज्जित हैं और 24 घन्टे सुविधायें देने के लिए तत्पर रहते हैं। गरीब मरीज़ों से रक्त का सर्विस चार्ज तक नहीं लिया जाता है। प्रगति के साथ ट्रोमा सेन्टर के ब्लड बैंक ने एक रक्त यूनिट से चार मरीजों की जान बचाने की तकनीक हासिल कर ली है।

खून ऐसी चीज़ है जिसे किसी प्रयोगशाला या कारखाने में तैयार नहीं किया जा सकता है। शरीर में इसकी कमी होने पर, व्यक्ति ही समय पर मदद कर सकते हैं। सितम्बर, 2010 में यूथ फेस्टिवल के दौरान एक दिन में 1200 यूनिट रक्तदान का रिकार्ड बना। हरेक के खून में 55 प्रतिशत प्लाज्मा, बाकी 45 प्रतिशत में लाल व सफेद कोषाणु तथा प्लेटलैट्स होते हैं। मात्र एक ही मि.ली.खून में 5 लाख लाल कोषाणु (RBC), 4000 से 11000 तक सफेद कोषाणु (WBC) और डेढ़ लाख से चार लाख तक प्लेटलैट्स होते हैं। सभी कोषाणु प्लाज्मा नामक तरल पदार्थ में तैरते रहते हैं। रक्तदान के तुरन्त बाद ही खून की कमी पूरी होनी शुरू हो जाती है। तरल पदार्थ अर्थात् प्लाज्मा की पूर्ति तो मात्र 24 घण्टे के अन्दर ही हो जाती है। खून के बाकी हिस्सों की पूर्ति भी दो सप्ताह के अन्दर ही हो जाती है।

खून के लाल कोषाणु फेफड़ों द्वारा आक्सीजन लेकर शरीर के सारे हिस्सों में पहुँचाते हुए मात्र 120 दिन

तक ही जीवित रह सकते हैं। सफेद कोषाणु शरीर में प्रवेश करने वाले रोगाणुओं का नाश करते हैं परन्तु इनकी उम्र 7 घन्टे से लेकर कुछ ही दिन तक होती है। प्लेटलैट्स घाव होने पर खून जमाने की मदद करते हैं जिनकी आयु पाँच दिन तक ही होती है।

नस-नाड़ियों में बहने वाला तरल पदार्थ प्लाज्मा, शरीर के सभी हिस्सों तक कोषाणुओं, पौष्टिक तत्वों तथा अनेकों रसायनों को पहुँचाता रहता है। किसी का भी ब्लड ग्रुप जीवन में कभी भी बदलता नहीं है। संसार के सभी प्रकार के मनुष्यों को मात्र चार ही ब्लड ग्रुप्स में बाँटा जा सकता है जिन्हें AB, A, B, तथा O ग्रुप के नाम से जाना जाता है। अठारह साल से 60 साल तक का कोई भी पुरुष 3 मास में एक बार तथा महिलायें 4 मास में एक बार रक्तदान कर सकते हैं। हृदयरोग, टी.बी., थायराइड, कैंसर, एड्स, गुर्दे की खराबी, मलेरिया तथा यौन सम्बन्धी बीमारियों से पीड़ित लोगों को तो रक्तदान करना ही नहीं चाहिए। रक्तदाता का वजन 45 कि.ग्रा. और हिमोग्लोबिन 12.5 से किसी भी हालत में कम नहीं होना चाहिए। रक्तदान में पौने घंटे से अधिक समय नहीं लगता है। उसके बाद चाय-काफी जैसी उत्तेजक चीजें नहीं लेनी चाहिएँ परन्तु कुछ सुपाच्य नाश्ता आदि करके खूब पानी पी लेना चाहिए। व्यायाम-धूम्रपान आदि का एकाध दिन परहेज भी रखना ही चाहिए।

जिन्हें खून की अति आवश्यकता है उन्हें रक्तदान देना अर्थात् नवजीवन प्रदान करना है। इसलिए स्वस्थ शरीर और स्वर्णिम दिल हो तो आज ही इस महादान के लिए तत्पर हो जाइए। कहीं न कहीं कोई आप द्वारा अपनी जान बचाने की आश लगाये अवश्य बैठा होगा। साहस करके आगे बढ़िए और दूसरों को जीयदान दीजिए। किसी भी ग्रुप के खून का दान करके भगवान की सर्वोच्च रचना मानव के लिए आप अद्भुत मदद कर रहे हैं। इससे जिस आत्म-गौरव और संतुष्टि का अनुभव होगा उसे शब्दों में बयान किया ही नहीं जा सकता है। आगे बढ़िये और दानी-महादानी का सुखद अनुभव कीजिए। अपने रक्त का अंशदान करना वैसा ही है जैसे व्यापार से धर्मादा निकालना। पैसे का दान तो लेने वाले को भोजन, कपड़े आदि की सुविधाएँ ही देता है और रक्तदान से जीवन दान मिल जाता है। ❖

जगदम्बा माँ

ब्र.कु.निरंजन, इलाहाबाद

जब कभी हम टूटते हैं ज़िन्दगी की मार से।
होके व्याकुल छटपटाते, तड़पते लाचार से।।

और जब 'माया' जगत की जकड़ लेती है हमें।
दुख, निराशा, भय, अंधेरा घेर लेता है हमें।।

दर्द, पीड़ा सहते-सहते निकलने लगती है जां।
मन पटल पर तब अचानक प्रकट हो जाती है मां।।

गोद में लेकर हमें पुचकारती, संवारती।
घाव तन-मन के वो धोती, आरती उतारती।।

दूर कर दुनिया के संकट, देती है जीवन नया।
तूने जो ''माँ'' को बनाया, ''रब'' तेरा है शुक्रिया।।

''मम्मा'' का स्मरण करिये, शख्सियत को जानिये।
उनका जो किरदार था, अच्छी तरह पहचानिये।।

प्यारी ''मां'' की पालना, बच्चे भुला सकते नहीं।
आज भी लगता कि ''मम्मा'' पास अपने हैं यहीं।।

अपने रूहानी गुणों से, शक्ति से, कर्त्तव्य से।
''मम्मा'' जगदम्बा बनीं, शुभ भावना और सत्य से।।

ब्रह्मा बाबा ने गुणों को देख 'सरस्वती' कहा।
शक्ति के सब रूप उनमें प्रकट होते थे सदा।।

आज जब हम पुन: ''माँ'' की याद, चिन्तन कर रहे।
'फालो फादर' कह रहीं वो, हम सब क्या सुन रहे?

ईश्वर का बच्चा होने का गर्व

● ब्रह्माकुमार यशपाल सिंह, योल कैम्प, धर्मशाला (हि.प्र.)

मैं पेशे से अध्यापक हूँ। एक दिन बातों ही बातों में मेरी एक सह-अध्यापिका ने मुझे बताया कि टी.वी. पर ब्रह्माकुमारी शिवानी बहन का बहुत अच्छा कार्यक्रम रोज़ शाम 7.10 पर आस्था चैनल पर आता है। उनकी बात सुनकर मैंने वह कार्यक्रम देखा और मैं इतना प्रभावित हुआ कि प्रतिदिन देखने लगा। पत्नी व पुत्र द्वारा उस समय अन्य कार्यक्रम देखने की स्थिति में मैं इन्टरनेट पर बहन शिवानी के कार्यक्रम देखने लगा। मैं उनसे बहुत प्रभावित हो चुका था।

स्वप्न में ब्रह्माकुमारियों के दर्शन

मन में संकल्प उठा कि किसी ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र पर जाकर ज्ञान प्राप्त करूँ। एक रात स्वप्न में लगा कि किसी से ब्रह्माकुमारी आश्रम का पता पूछ रहा हूँ और उन्होंने दूर से ही मुझे आश्रम दिखाया। मैंने देखा कि वहाँ कई लोग बैठे थे और सफेद साड़ियाँ पहने ब्रह्माकुमारियाँ वहाँ खड़ी थीं। मैं उस ओर चल पड़ा परन्तु तभी मेरी आँखें खुल गई।

इन्टरनेट पर सेवाकेन्द्र की जानकारी

मैंने इन्टरनेट पर नज़दीकी सेवाकेन्द्र का पता प्राप्त किया। वह केन्द्र घर से 10 कि.मी. दूर था। मैंने सेवाकेन्द्र की बड़ी बहन से सम्पर्क किया। उन्होंने ज्ञान सीखने का निमन्त्रण दिया परन्तु मैं यह सोच कर वापिस लौट गया कि महिलाओं के पास जाना है तो किसी महिला अध्यापिका को साथ लेकर जाऊँगा। मैंने अपनी सह-अध्यापिका से किसी दिन ब्रह्माकुमारी आश्रम में साथ चलने का आग्रह किया परन्तु किन्हीं कारणों वश वे न जा सकी।

शिव के ध्वज ने दिखाया मार्ग

मैं मोटर साइकिल पर रोज़ जिस मार्ग से होता हुआ घर जाता हूँ, उसी मार्ग पर गगल नामक स्थान पर एक दिन भवन के ऊपर शिवध्वज देखा। उत्सुकतावश वहाँ मोटर साइकिल खड़ी की और देखा कि ऊपर वाली मंजिल पर ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र लिखा था। शिव बाबा स्वयं सीढ़ियाँ चढ़ा कर मुझे वहाँ ले गए। बहन मुझे ससम्मान ज्ञान-चर्चा के लिए ज्ञान-कक्ष में ले गई। इसके बाद मैं समय-समय पर इस (गगल) सेवाकेन्द्र पर जाने लगा और सहज राजयोग का कोर्स भी कर लिया। मेरी पत्नी ने भी पूर्ण कोर्स किया और इस शुभ कार्य में मेरा पूरा सहयोग दिया।

ईश्वर का बच्चा होने का गर्व

अब मुझे इस बात पर बहुत गर्व महसूस होता है कि मैं ईश्वर का बच्चा हूँ और ईश्वर ने मुझे स्वयं चुना है। मुझे परिवार सहित मधुबन जाने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ है। ❖

क्या खूब कहा

ग़रीब मीलों चलता है, भोजन पाने के लिए,
अमीर मीलों चलता है, उसे पचाने के लिए।
किसी के पास खाने के लिए एक वक्त की रोटी नहीं,
किसी के पास एक रोटी खाने के लिए वक्त नहीं।
कोई अपनों के लिए, अपनी रोटी छोड़ देता है,
कोई रोटी के लिए, अपनों को छोड़ देता है।
इंसान भी क्या चीज़ है!
दौलत बचाने के लिए सेहत खो देता है और
सेहत को वापिस पाने के लिए, दौलत खो देता है।
जीता ऐसे है जैसे कभी मरेगा ही नहीं,
और मर ऐसे जाता है जैसे कभी जीया ही नहीं।
एक मिनट में ज़िंदगी नहीं बदलती
पर एक मिनट में लिया गया फैसला, ज़िंदगी बदल देता है।

जानिए पीस ऑफ माइंड चैनल के बारे में

पीस ऑफ माइंड चैनल की शुरूआत

- 18 जनवरी 2011 - मुंबई डिजी केबल नेटवर्क पर
- अप्रैल 2011 - इन-मुंबई केबल नेटवर्क पर
- अगस्त 2011 - रिलायंस बिग टी.वी.पर (40 लाख घरों में) - चैनल नंबर - 171
- मार्च 2012 - सैटेलाइट इन्सैट 4ए - द्वारा 83 देशों में।
- 18 जनवरी 2013 - वीडियोकॉन डी.टी.एच. (1 करोड़ से ज्यादा घरों में) चैनल नं.497
- जनवरी 2014 – आईपी टी.वी.(रोकू बॉक्स) - सभी देशों के लिए।
- **डिजिटल केबल नेटवर्क:-** जीटीपीएल, हेथवे, डिजी केबल, विन केबल, इन केबल, सिटी केबल, डेन नेटवर्क, श्री बालाजी, एसवीपीएल आदि जैसे डिजिटल और एनलॉग केबल नेटवर्क के द्वारा भारत में 40% से भी अधिक घरों में चैनल उपलब्ध।
- **एनलॉग केबल नेटवर्क:-** पर 1200+ से भी अधिक mpeg4 रिसीवर के द्वारा FREE दिखाने का अनुरोध करें।

केबल सेवा

- केबल ऑपरेटर को "C" बैंड पर mpeg4 रिसीवर के द्वारा FREE दिखाने का अनुरोध करें।

कोन्फिगरैशन

फ्रिक्वेन्सी : **4054,** पोलराइजेशन : **हॉरिजॉन्टल,**

सिम्बल : **13230,** सैटेलाइट : **इन्सैट 4A,**

डीटीएच सेवा

1.रिलायंस बिग टीवी (चैनल नंबर:171)

- रिलायंस का कोई भी पैक लें और रु.16/- प्रति माह अथवा रु. 157/- प्रति साल देकर पीस ऑफ माइंड चैनल लें।
- किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए, रिलायंस कस्टमर केयर 1800 200 9001 पर कॉल करें।

2.वीडियोकॉन डीटीएच (चैनल नंबर:497)

- वीडियोकॉन का कोई भी पैक लेने पर उसके साथ पीस ऑफ माइंड चैनल फ्री है।
- किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए, वीडियोकॉन कस्टमर केयर 073558 73558 पर कॉल करें या customercare@d2h.com पर ईमेल करें।

आपके क्षेत्र में पीस ऑफ माइंड चैनल शुरू करवाने की विधि

- केबल नेटवर्क और समाज को पीस ऑफ माइंड चैनल से होने वाले लाभ बताएं।

- केबल ऑपरेटर को इच्छुक उपभोक्ताओं की सूची के साथ अनुरोध पत्र दें।
- वीआईपी/आईपी तथा अन्य व्यक्ति की मदद के द्वारा पीस ऑफ माइंड चैनल शुरू करवायें।
- केबल ऑपरेटर को MPEG4 रिसीवर प्रदान करें (देशभर में 1200+रिसीवर शुरू किए जा चुके हैं)। डिजिटल नेटवर्क के लिए हमें केवल फ्रिक्वेन्सी बताने की जरूरत है।

पीस न्यूज के लिए विडियो भेजने की विधि

- Video file format = .mp4/.avi/.mov files
- Free ftp software = filezilla, coreftp, smartftp etc.
- Host name = newsftp.godlywoodstudio.org
- User name = peacenews
- password = gw8news
- Email = godlywoodstudio@gmail.com
- 3/4 दिन से पुराने समाचार को न्यूज़ में स्थान नहीं दिया जायेगा।

कार्यक्रम की सूची (Scroll) की जानकारी भेजने की विधि

- कार्यक्रम का नाम, वक्ता की जानकारी, तारीख, समय, स्थान, संपर्क नंबर।
- कार्यक्रम पर्चा स्कैन कॉपी के साथ ईमेल करें pmtv@bkivv.org

पीस ऑफ माइंड चैनल की लोकप्रियता बढ़ाने की विधि

- बैनर, प्रेस विज्ञप्ति, पर्चा, पुस्तिका द्वारा एवं लोकल चैनल में पीस ऑफ माइंड चैनल की जानकारी दे सकते हैं।

बीमारी में बाबा की मदद

सन् 2012 में मेरे 5 माह के बेटे के शरीर में पानी की कमी हो गई और डाक्टर ने भर्ती करने को कहा। पति को बुखार होने के कारण मैं और मेरा देवर उसे भर्ती करने गये तो वहाँ एक अन्य छोटे बच्चे को सिरिंज लगाई जा रही थी। वह दर्द के मारे बहुत रो रहा था। उसकी नस न मिलने के कारण कम्पाउन्डर सूई को बार-बार लगाता-निकालता था। बच्चे की तकलीफ को देखकर मेरे मन में रहम आ रहा था। उसके बाद जब मेरे बेटे को सिरिंज लगने का नम्बर आया तो मैं उसे उसके चाचा को देकर बाहर आकर बैठ गई और योग में बाबा से बार-बार यही कह रही थी कि बाबा आपका बच्चा है, आप ही देखो, इतने छोटे बच्चे को इतनी ज्यादा तकलीफ न हो। प्यारे बाबा, इस आत्मा के दुख को सूली से काँटा कर दो। बाबा से योग में बातें करती रही और मानो प्यारे बाबा ने बच्चे की सूई के आगे हाथ लगा लिया हो। आश्चर्य हुआ कि बच्चे को ज़रा भी दर्द नहीं हुआ। इतना छोटा बच्चा और उसने चूँ भी नहीं की। मैं बाबा का शुक्रिया अदा करती रही। इसके बाद भी बीमारी के दौरान बाबा की मदद के अनेकानेक अनुभव हुए और आज भी होते रहते हैं।

– कविता सैनी, मेरठ

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : omshantipress@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125 gyanamritpatrika@bkivv.org

1.**धरान (नेपाल)**- चतराधाम के पीठाधीश अनन्त श्री मोहन शरण देवाचार्य महाराज को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.नानी मैया बहन। 2.**वार्शी**- महाराष्ट्र के जल आपूर्ति तथा स्वच्छता मंत्री भ्राता दिलीपराव सोपल का सम्मान करते हुए ब्र.कु.सोमप्रभा बहन तथा अन्य। 3.**सेडम**- कर्नाटक के चिकित्सा शिक्षा मंत्री भ्राता शरण प्रकाश पाटिल द्वारा सम्मान प्राप्त करते हुए ब्र.कु.कला बहन। 4.**पोखरा**- नेपाल के जनस्वास्थ्य मंत्री भ्राता खगराज अधिकारी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.शोभा बहन तथा ब्र.कु.रमा बहन। 5.**सांगली (सागांव)**- महाराष्ट्र विधान परिषद अध्यक्ष भ्राता शिवाजीराव देशमुख को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.नन्दा बहन। 6.**सोनपेठ (सोलापुर)**- - महाराष्ट्र के ग्राम विकास मंत्री भ्राता जयत पाटिल को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.मीरा बहन। 7.**मुंबई (कोलाबा)**- आई.पी.एल.की रायल चेलेन्जर टीम के कप्तान भ्राता विराट कोहली को ईश्वरीय सन्देश देने के बाद ब्र.कु.गायत्री बहन उनके साथ। 8.**वाशी (नवी मुंबई)**- महाराष्ट्र के उत्पादन शुल्क मंत्री भ्राता गणेश नाइक को ईश्वरीय साहित्य देते हुए ब्र.कु.शीला बहन। 9.**पूणे**- अभिनेता एवं सासद भ्राता विनोद खन्ना को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.रूपा बहन। साथ में ब्र.कु.दीपक भाई। 10.**हैदराबाद (शान्ति सरोवर)**- 'मेंटल टफनेस एंड स्पोर्टस्' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.कुलदीप बहन, टेबल टेनिस खिलाड़ी भ्राता मोर रसीन अली, स्पोर्टस् स्कूल निदेशक भ्राता नरसैय्या तथा अन्य।

RNI No.10563/1965, Postal Regd. No.RJ/SRO/9559/2012-2014 Posting at Shantivan-307510 (Abu Road) Licensed to post without prepayment No. RJ/WR/WPP/002/2013-2014. Published on 25th of each Month & Posted on 1st to 6th of each month. Price 1 copy Rs. 8.50, Issue : June 2014.

1.आबू पर्वत- धार्मिक प्रभाग द्वारा आयोजित 'सनातन संस्कृति की पुनर्स्थापना' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.गोदावरी बहन, साध्वी डॉ.सुशीला देवी जी, राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी, महामण्डलेश्वर जन्मजयशरण जी, ब्र.कु.रामनाथ भाई, ब्र.कु.नलिनी बहन तथा अन्य।

2.ज्ञान सरोवर (आबू पर्वत)- 'स्वर्णिम विश्व में कलाकारों का योगदान' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए गुजरात कांग्रेस की सांस्कृतिक समिति के अध्यक्ष भाता दिनेश कुमार पटेल, 19 भाषाओं में गायन की ख्याति प्राप्त एस.जानकी, कवि रूपनारायण चानना, फिल्म व टी.वी.निदेशक संदीप गुप्ता, फिल्म व टी.वी.कलाकार रेखा राव, ब्र.कु.रमेश शाह, ब्र.कु.मृत्युंजय भाई तथा ब्र.कु.डॉ.निर्मला बहन।

3.ज्ञान सरोवर (आबू पर्वत)- सुरक्षा प्रभाग द्वारा आयोजित सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.अशोक गाबा, कर्नल सती, सेवानिवृत्त लेफ्टिनेंट जनरल भाता एस.रविशंकर, सी.आर.पी. एफ. के महानिरीक्षक भाता वी.एस. चौहान, राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी तथा अन्य।

4.ज्ञान सरोवर (आबू पर्वत)- वैज्ञानिक तथा अभियन्ता प्रभाग द्वारा आयोजित सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी जी, रावतभाटा एटामिक पावर स्टेशन के निदेशक भाता सी.डी.राजपूत, ब्र.कु.मोहन सिंघल, ब्र.कु.सरला बहन तथा अन्य।